मूल्य: 20/-

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

वर्ष-1, अंक:-07 नवम्बर, 2024

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

RNI No.: BIHHIN/2023/86004

जन्म: 1 अक्टूबर 1952
निधन: 5 नवम्बर 2024

पद्मभूषण (स्व.) शारदा सिन्हा : जिनका गायन इनके शुरुआती दिनों में ही प्रार्थना गीत बन गया

लोगों ने टोका था मुझे कि कबाड़ का बिजनेस औरत नहीं करती है : किरण, कबाड़ीवाली

शूटिंग के दौरान एक सनकी ने मेरा हाथ पकड़ लिया था : गार्गी पंडित (प्रियंका), भोजपुरी फिल्म अभिनेत्री

मेल बॉक्स

बोलो जिंदगी

के पाठक हमसे सीधा सम्पर्क करें।

नीचे दिये गये ई-मेल के माध्यम से हमे बतायें कि उन्हें कौन सा आलेख ज्यादा पसंद आया।

क्या कमियां हैं

और उनके क्या सुझाव हैं।

E-mail : bolozindagi@gmail.com

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष–1, अंक: 07 नवम्बर, 2024

संपादक : **राकेश कुमार सिंह**
सहायक संपादक : **अमलेंदु कुमार**
प्रबंध संपादक : **प्रीतम कुमार**
सलाहकार संपादक : **मनोज भावुक**
कंप्यूटर ग्राफिक्स : **संजय कुमार**
कानूनी सलाहकार : **अमित कुमार**
प्रचार–प्रसार : **अनिल कुमार**
राकेश कुमार 'छोटू'
(ब्यूरो प्रमुख)
मुंबई : **अमृत सिन्हा**
नई दिल्ली एवं कोलकाता : **उज्ज्वल कुमार झा**

BIHHIN/2023/86004

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार सिंह द्वारा अन्नपूर्णा ग्राफिक्स, C/O जय दुर्गा प्रेस, बिहाइंड गुलाब पैलेस, आर्य कुमार रोड, पटना, बिहार–800004 से मुद्रित एवं 3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001 से प्रकाशित ।
संपादक : **राकेश कुमार सिंह**

संपादकीय कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. – 7903935006/7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com

रजि. कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. : 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com
वेबसाइट : www.bolozindagi.com

सभी पद अवैतनिक

सभी विवादों का निपटारा पटना की सीमा में आनेवाली सक्षम अदालतों में किया जाएगा।

पद्मभूषण (स्व.) शारदा सिन्हा : जिनका गायन इनके शुरुआती दिनों में ही प्रार्थना गीत बन गया

03

1.	सरहद पार भी छठ महापर्व की बढ़ी है व्यापकता	2
2.	पद्मभूषण (स्व.) शारदा सिन्हा से जुड़े कुछ रोचक तथ्य	4
3.	जब शादी के बाद ससुराल पहुंची तो रिवाज की वजह से सबके सामने गाना पड़ा	5
4.	शूटिंग के दौरान एक सनकी ने मेरा हाथ पकड़ लिया था : गार्गी पंडित (प्रियंका), भोजपुरी फिल्म अभिनेत्री	9
5.	पहले जहाँ रिश्ता कैंसल हुआ बाद में वहीं मेरी शादी हुई	10
6.	लोगों ने टोका था मुझे कि कबाड़ का बिजनेस औरत नहीं करती है : किरण, कबाड़ीवाली	12
7.	क्यों मार खाते हैं बच्चे ?	14
8.	मिसाल बना एक फौजी का पर्यावरण प्रेम	16
9.	वो नाश्ता	18
10.	विद्या, विवेक और वाणी के अधिष्ठाता बुध	19
11.	न्याय की देवी में हुआ सार्थक बदलाव–सर्वोच्च न्यायालय के लाइब्रेरी में रखी गई प्रतिमा	20
12.	इंपा ने किया मुंबई आए बिहार राज्य फिल्म विकास एवं वित्त निगम के अधिकारियों का स्वागत	21
13.	मृणाल कुलकर्णी अभिनीत हिंदी फिल्म 'ढ़ाई आखर' का ट्रेलर जारी	22
14.	ह्यूस्टन, अमेरिका के 'शिव, दुर्गा, कृष्ण, काली मंदिर' ट्रस्ट की दुर्गापूजा में सम्मिलित हुईं भारतीय वाणिज्य दूत	23
15.	पानी पर तैरता स्वप्न–लोक : लोकतक झील	24
16.	हिम्मत की सहेली आशा	26
17.	दुग्ध का उत्पादन विश्व में शीर्ष पर, अब निर्यात की ओर अग्रसर भारत	27
18.	बिहार का छठ इफेक्ट	28
19.	हाउस प्रोपर्टी कितना देना होता है टैक्स, जानिए कैसे क्लेम कर सकते हैं डिडक्शन	29
20.	करियर में सफलता की नींव है इंटर्नशिप	30
21.	इंटर्नशिप से रोजगार तक की यात्रा	30
22.	छठ स्पेशल गुड़ की खीर एवं ठेकुआ	32

सरहद पार भी छठ महापर्व की बढ़ी है व्यापकता

छठ से बिहार का नाम पहचान बढ़ा है। बिहार से बाहर गए लाखों बिहारी छठ महापर्व आते ही अपनी जड़ जमीन की तरफ लौटने लगते हैं। जो किसी वजह से आ नहीं पाते वहीं दूर रहकर ही इस पर्व को उतनी ही श्रद्धा के साथ मनाते हैं जितना कि बिहार में।

बरसों से प्रचलित है और देखा सुना गया है कि छठ पर्व आते ही कुछ दिनों के लिए अमन चौन का वातावरण छा जाता है। किसी को किसी से वैर नहीं। चोरी, डकैती, हत्या, लूट की वारदातें इन चार दिनों में थम सी जाती हैं। लोग इस पवित्र पर्व के दरमियान कुछ भी बुरा करने, सोचने से डरते हैं। नालायक समझे जानेवाले युवा भी तब छठ व्रतियों की सुविधा के लिए सड़कें, गलियां साफ करते हैं। उसे सजाते हैं। लेकिन यह आस्था थोड़ी चरमराती नजर आई जब 2024 के छठ में बिहार के कई हिस्सों में अहिंसक वारदातों की सूचना मिली। कई लोगों ने इस पावन पर्व के दौरान आपसी रंजिश निकाली। यहां तक की कुछ एक छठ व्रतियों को हिंसा का शिकार होना पड़ा, कुछ की जान भी चली गई। हम जैसे लोग जो वर्षों से छठ पर्व की महिमा देखते आ रहे हैं ऐसी घटनाओं से बहुत ही अचंभित हुएं। लेकिन ऐसी निंदनीय घटनाओं की त्रासदी तब थोड़ी कम हुई जब यह खबरें भी देखने को मिलीं कि छठ महापर्व भारत के बाहर सात समुंदर पार और भी व्यापकता, भव्यता और पूरी श्रद्धा के साथ भाईचारे का पैगाम देते हुए जनमानस में छा गया। ना सिर्फ इंग्लैंड, कनाडा, अमेरिका जैसा देश बल्कि कुछ मुस्लिम देशों में भी धूमधाम से छठ पूजा मनाई गई। दुबई में तो कई मुस्लिम भी छठ पूजा करते देखे गए। यानी छठ पूजा में अब धर्म की बंदिशें भी मिटने लगी हैं। लोग जाति–मजहब से ऊपर उठ मिलजुल कर छठ पर्व की महिमा को चरितार्थ करने लगे हैं। यह संदेश समाज में निश्चित ही सकारात्मक की व्यापक छवि प्रस्तुत करेगा इसमें संदेह नहीं।

राकेश कुमार सिंह
संपादक

पद्मभूषण (स्व.) शारदा सिन्हा : जिनका गायन इनके शुरुआती दिनों में ही प्रार्थना गीत बन गया

✍ मनोज भावुक
भोजपुरी सिनेमा के इतिहासकार,
फिल्म गीतकार व
भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक

शारदा सिन्हा भारतीय संगीत की एक ऐसी गायिका थीं, जिनका गायन इनके शुरुआती दिनों में ही प्रार्थना गीत बन गया और पूर्वोत्तर भारत के कोने–कोने में गूँजने लगा दृ जगदंबा घर में दियरा बार अइनी हो। ... और सचमुच उत्तर प्रदेश, बिहार व झारखंड ही नहीं, पूरे देश और देश के बाहर सात समुंदर पार के उन सभी देशों में जहाँ पर भोजपुरी भाषी या बिहार–यूपी से गये लोग रहते हैं, गिरमिटिया देशों के लोग हैं, उनके मंदिरों में, उनके आँगन में, उनके तुलसीचौरा पर एक ऐसा दीप जलाया लोक संगीत का जो आज भी उन क्षेत्रों को आलोकित करता है, प्रकाशित करता है। धार के खिलाफ चलने वाली और भोजपुरी में श्लील गीतों की गंगा बहाने वाली भागीरथी पद्मश्री और पद्मभूषण शारदा सिन्हा जी अब दैहिक रूप में हमारे साथ नहीं रहीं। छठी मइया ने अपनी दुलारी बिटिया को छठ पूजा के पहले ही दिन (5 नवंबर 2024) अपनी गोद में ले लिया।

भोजपुरी लोक संगीत की वह एकमात्र लीविंग लिजेंड थीं। शारदा सिन्हा के होने का मतलब पूरा लोक राग, लोक संस्कृति, संस्कार और जीवनशैली उनके साथ चलता था उनके गीतों में। छठ उसका एक हिस्सा है। चूंकि, उनकी पहचान छठ गीतों से बनी थी और उस समय आज की तरह एकसाथ हजारों गीत रिलीज नहीं थे। तब हर जगह सिर्फ शारदा सिन्हा के ही गीत बजते थे। वह छठ गीतों की पर्याय रही हैं और छठ के समय ही उनका निधन हो जाना...क्या कहा जाए!

अश्लीलता और फूहड़ता के इस दौर में भी शारदा जी का एक अलग ही रंग था। वह इस बात को मानती थीं कि चारों तरफ अंधेरा हो, लेकिन उसमें एक दीया भी उजाला करे तो पूरे अंधेरे पर भारी पड़ता है। जब हम अच्छा गीत गा रहे हैं, अच्छा काम कर रहे हैं, तो हमें ये नहीं सोचना है कि हमारी संख्या कम है। हम दीपक बने।

शारदा जी का जाना सिर्फ बिहार, यूपी और पूर्वांचल के लिए ही नहीं, बल्कि गिरमिटिया कंट्री की भी बड़ी क्षति है। चाहे फिजी हो, सूरीनाम हो या मॉरीशस, या फिर अमेरिका हो, जहां भी अपने लोग गए हैं, छठ के इस उत्सव पर हर जगह सन्नाटा पसरा हुआ था। इस वक्त उनके जाने से दुख जो है, दुना हो गया। भोजपुरी के हर घर में लोक राग और लोक रंग का दीया बारने वाली गायिका शारदा जी के जाने से लय, सुर और राग सब रो रहे हैं।

मेरा उनसे मां और बेटे जैसा संबंध रहा है। उनसे लगातार बातचीत होती रहती थी। मैंने उनके साथ 50 से अधिक कार्यक्रम और स्टेज शो किए। मैं सौभाग्यशाली रहा हूं कि पिछले साल लखनऊ में फिल्म फेयर और फेमिना ने एक अवॉर्ड शो का आयोजन किया था। उसमें संगीत के लिए शारदा जी को सम्मानित किया गया और साहित्य के लिए मुझे। तब वो गोद में भरकर मुझे बहुत पुचकारीं और बोलीं तुम्हारे कंधे पर भोजपुरी का भविष्य है।

चुनौतियों से जमकर लड़ीं

शारदा जी संभ्रांत परिवार से ताल्लुक रखती थीं। उस समय महिलाओं का स्टेज पर गाना अच्छा नहीं माना जाता था। तमाम चुनौतियों से लड़कर उन्होंने अपने गीतों के जरिये यह मुकाम हासिल किया। भोजपुरी में विंध्यावासिनी देवी के बाद गीतों के जरिये लोक–संस्कृति को आगे लाने की हिम्मत शारदा जी ने ही दिखाई थी।

अपनी मिट्टी से रहा जुड़ाव

शारदा जी को कई बार रहने के लिए मुंबई से बुलावा आया। लेकिन, वह कभी नहीं गईं। उनका अपनी मिट्टी से गहरा जुड़ाव

रहा था। पटना के घाट से गहरा जुड़ाव था और देखिए कि भले उनका निधन एम्स दिल्ली में हुआ लेकिन अंतिम संस्कार पटना के घाट पर ही हुआ।

लगा मैं मायके आ गई हूं...

शारदा जी का अपने रीति–रिवाजों से गहरा लगाव था। छोटी–छोटी बातों पर खुश हो जाती थीं। एक बार मॉरीशस में उनका कार्यक्रम था, जहां लोगों ने उनका खोइंछा (बेटी की विदाई के समय साड़ी के आंचल में अनाज, पैसा आदि डालना) भरा। इससे वह बड़ी खुश हुईं और कहने लगीं...लगता है जैसे मैं मायके आ गई हूं।

बबुआ भइल अब सेयान कि गोदिए नू छोट हो गइल

शारदा जी से मेरी पहली मुलाकात वर्ष 2011 में हुई। पटना में एक कार्यक्रम था जिसका संचालन मैंने ही किया। कार्यक्रम से पहले उनसे मिला और परिचय दिया– मेरा नाम मनोज भावुक है। उन्होंने तपाक से कहा– ''बबुआ भइल अब सेयान कि गोदिए नू छोट हो गइल''

मै अचरज से उन्हें निहारने लगा। इतनी बड़ी गायिका को मेरे जैसे अदना गीतकार के गीत की लाइन याद है। वह मुस्कुराकर बोलीं, आपका यह गीत मुझे बहुत पसंद है। मै इसे गाना चाहूँगी।

बहुत दिनों के बाद जब मैंने उनका एक लंबा वीडियो इंटरव्यू किया, उसमें भी मेरे गीत–गजलों की तारीफ करते इस गीत का जिक्र किया उन्होंने और गाने की इच्छा जाहिर की। एक और गीत 'टुकी–टुकी बाबूजी के बाग हो गइल' पर तो उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि मुझे देने के बाद ही किसी को दीजिएगा।

गीतों की रिकॉर्डिंग को लेकर मैं कभी भी सजग और संजीदा नहीं रहा। आलसी और संकोची रहा। बात आई–गई और चली गई। ... और अब तो शारदा माई भी चलीं गईं।

माई शब्द का प्रयोग किसी और गायिका के लिए दुनिया वालों ने नहीं किया। यह आदर सिर्फ शारदा दीदी को ही नसीब हुआ। हाँ, मै दीदी ही कहता था। यह अलग बात है कि उनके बेटे अंशुमान और बेटी वंदना मेरे मित्र हैं, आत्मीय हैं।

सिर्फ रश्म अदायगी नहीं, सचमुच उनके नाम पर कुछ हो

संगीत में लड़कियों के लिए राह गढ़ने वाली पद्मश्री विंध्यावासिनी देवी चली गईं। उनके नाम पर बिहार में कुछ भी नहीं है। अब शारदा जी भी चली गईं। इनके साथ भी वही कहानी न दुहराई जाए। इनकी स्मृति में कुछ ऐसा निर्मित हो जिससे नई पीढ़ी प्रेरणा लेती रहे।

शारदा दीदी की पावन स्मृति को नमन ! श्रद्धांजलि! ❐

पद्मभूषण (स्व.) शारदा सिन्हा से जुड़े कुछ रोचक तथ्य

1) बड़े भाई की शादी में पहला गीत ऋ शारदा जी की भाई की शादी में दुआरछेकाई के समय उनकी भाभी ने कहा कि जबतक गीत नहीं गाईएगा नेग नहीं मिलेगा। तब उन्होंने अपने जीवन का पहला गीत गाया था जिसके बोल हैं ऋ द्वार के छेकाई नेग, पहिले चुकईह हे दुलरूआ भैया... तब जईह कोहबर आपन हे दुलरूआ भैया...।

2) पहला गीत 1971 में रिकॉर्ड हुआ , 1985 में रिकॉर्ड हुआ पहला कैसेट ऋ शारदा सिन्हा का पहला गीत एचएमवी से वर्ष 1971 में रिकॉर्ड हुआ था। इसके बाद टी सीरीज के लिए 1985 में पहला कैसेट रिकॉर्ड हुआ।

3) बॉलीवुड फिल्मों में गाए गाने 1989 में शारदा सिन्हा ने राजश्री प्रोडक्शन के बैनर तले बनी फिल्म ष्मैंने प्यार किया में पहला गाना गाया, कहे तोसे सजना तोहरी सजनिया..। फिर उसी बैनर तले 1994 में आई फिल्म हम आपके हैं कौन में विदाई गीत गाया बाबुल जो तुमने सिखाया... यह गीत इतना हिट हुआ कि घर घर के विवाह कैसेट में बेटी की विदाई के समय इसे फिल्माया जाने लगा। 2012 में रिलीज हुई फिल्म गैंग्स ऑफ वासेपुर–2 में तार बिजली से पतले हमारे पिया.. उनका गाया यह गाना भी बहुत लोकप्रिय हुआ।

4) शारदा जी का अंतिम गाया गीत था, ष्दुखवा मिटाई छठी मैया... रउए असरा हमार.. यह छठ गीत 30 अक्टूबर को उनके पुत्र अंशुमान सिन्हा ने जारी किया था। तब वे बीमारी के दौरान इलाज के लिए दिल्ली एम्स में भर्ती थीं।

5) सास को नहीं पसंद था गाना ऋ विवाह के बाद ससुराल पक्ष के कई सदस्य नहीं चाहते थें कि शारदा जी गायन करें। पति सपोर्ट में थें, ससुर भी उनकी गायिकी के शौक का विरोध नहीं करते थे, लेकिन सास नाराज रहती थीं। एक बार उनकी सास ने गायिकी के विरोध में खाना पीना तक छोड़ दिया था। जब शारदा जी ने गांव के ठाकुरबाड़ी में भजन गाया और जब गांव के अलावा अन्य जगहों से तारीफें मिलने लगीं तब सास ने भी विरोध छोड़ दिया। ❐

जब शादी के बाद ससुराल पहुंची तो रिवाज की वजह से सबके सामने गाना पड़ा

माया शंकर, प्रोफेसर, पटना यूनिवर्सिटी एवं चेयरपर्सन ऑफ 'स्पीक मैके', पटना

मेरा गांव नॉर्थ बिहार के जंदाहा में है लेकिन मेरा जन्म पटना में हुआ। हम चार भाई–बहन थें जिनमे मैं सबसे छोटी हूँ। साल में एक बार दशहरा के समय गांव जाना होता था। गांव में दशहरा बहुत धूमधाम से मनाया जाता था। मेरे दादा जमींदार थें तो वहां काफी खेती–बाड़ी थी। उनके खेत में तब मेला लगता था और दुर्गा जी बैठती थीं। हमलोग इंतजार में रहते कि कब छुट्टी हो और हमलोग गांव भागें। मेरे पापा स्व. विंध्यवासिनी प्रसाद सिन्हा पटना हाईकोर्ट में सीनियर एडवोकेट थें। वो भी बोलते थें कि 'जल्दी बच्चों की छुट्टी हो और हमलोग चलें जंदाहा।' पहले सड़क थी नहीं तो हमलोग पानी के जहाज से जाते थें। महेन्द्रू घाट से चलकर पहलेजा घाट उतरते थें। वहां से सोनपुर जाते थें, फिर वहां से ट्रेन पकड़ते थें तब जंदाहा पहुँचते थें। स्टेशन से 5 किलोमीटर अंदर गांव में जाना होता था तो हमलोग टमटम से जाते थें। मेरी माँ साथ होती थीं तो ट्रेन रुकते–रुकते उनका घूँघट एकदम नीचे आ जाता था। क्यूंकि सारे गांववाले जानते थें कि जमींदार साहब की बहू आयी हैं। जबकि मेरी स्व. माँ ऐसे स्कूल बिशप स्कॉर्ट हाई स्कूल से थीं जिसमे अग्रेजों के बच्चे पढ़ते थें और मेरी माँ एकमात्र इंडियन थी। शायद इसलिए उन्हें काफी तंग किया जाता था। माँ ने तब एक मजेदार बात बताई थी कि जब वे ब्रश करती थीं और जीभी कर रही होतीं तो सब बोलती कि तुम बहुत गन्दी हो। तो माँ बोलती कि तुमलोग ज्यादा गन्दी हो क्यूंकि हम तो मुँह की गंदगी को बाहर निकालते हैं लेकिन तुमलोग अंदर ही रखती हो। दरअसल

अंग्रेज जीभी नहीं करते हैं। तब रांची, झाड़खंड के नामकुम्भ में उस इंग्लिश मीडियम बिशप स्कूल से माँ पढ़ी थीं और शायद इसी वजह से मरते दमतक वो इंग्लिश में बात करती थी। नाना फॉरेस्ट ऑफिसर थें इसलिए छुट्टी के दिनों में माँ जंगल में रात–बेरात घूमती रहती थीं। ना उन्हें बाघ–चीता का डर , ना सांप का डर , इतनी बोल्ड थीं वो। और मुझे ताज्जुब हुआ सुनकर जब माँ ने हमें बताया कि 'मेरी शादी हुई तो पहले चढ़ी पालकी में फिर पालकी को सब नाव पर डाल दिए गंगा नदी पार करने के लिए। फिर वहां से ट्रेन से गएँ तो लम्बा घूँघट डालकर बैलगाड़ी से जाना पड़ा।'

अपनी बात कहूँ तो– मेरी स्कूलिंग हुई संत जोसेफ कॉन्वेंट से। मैट्रिक के इक्जाम में हमारा सेंटर पड़ा था बांकीपुर गर्ल्स हाई स्कूल में। तब बड़ा अजीब लगता कि संत जोसेफ कॉन्वेंट का एक मिशनरी इंस्ट्यूशन, उसका अपना एक अलग साफ–सफाई का कल्चर, डिसिप्लिन सब बिलकुल अलग था और यहाँ सरकारी स्कूल में दूसरा ही सिस्टम देखने को मिला। वहां से पासआउट करने के बाद पटना वीमेंस कॉलेज में एडमिशन हो गया फिर वहीँ से मैंने ग्रेजुएशन किया। मेरा हिस्ट्री ऑनर्स था। उस समय पटना वीमेंस कॉलेज में ऑनर्स सिर्फ इंग्लिश और होमसाइंस में होता था। बस आती थी और

बस से हमलोग ऑनर्स क्लास करने जाते थें पटना कॉलेज। वो भी लाइफ का एक एक्सपीरियंस है कि जब सबको पता चलता कि पटना वीमेंस कॉलेज की लड़कियों की बस आ रही है तो पटना कॉलेज के लड़के पहले से ही लाइन में खड़े हो जाते थें। हमारी प्रिंसिपल थीं सिस्टर लूसल जो बहुत स्ट्रिक्ट और डिसिप्लिन पसंद थीं। लेकिन हमारे बैच में कुछ लड़कियां इतनी स्मार्ट थीं की उनको कोई परवाह ही नहीं होती थी। सिस्टर ऊपर से देखते रहती थीं कि कौन कैसा कपड़ा पहनी है। शर्ट–पैंट पहनी है तो शर्ट बाहर है कि अंदर है। चूड़ीदार कुर्ता है तो दुपट्टा है कि नहीं है। साड़ी है तो ब्लाउज बहुत डीप है कि कैसा है। और वो जिसको गड़बड़ देखती उसको कॉलेज के अंदर नहीं जाने देतीं और उसी वक्त सीधे घर भेज देती थीं। उन्ही दिनों कॉलेज में हमारी एक मित्र थीं जो आजकल पटना के पोलटिक्स में चोटी पर हैं, वो बड़ी चुलबुली और बिंदास हुआ करती थीं। वह अक्सर शर्ट–पैंट पहना करती थी। जब सिस्टर ऊपर से देखती तो उसका शर्ट बाहर आ जाता था और जब वह बस से पटना कॉलेज में उतरती तो शर्ट अंदर आ जाता था। हमलोग हँसते कि किसी दिन पकड़ाओगी तो तुमको परेशानी होगी। एक और बहुत मजेदार बात हुई थी, जब हमलोग सीनियर्स थें तब 'बॉबी' फिल्म आयी थी जो वीणा सिनेमा हॉल में लगी थी। हमारे बैच की दो लड़कियां थीं, एक खूब लम्बी और दूसरी शॉर्ट हाइट की। वे दोनों बोलीं कि 'भई हमलोगों को तो फर्स्ट डे फर्स्ट शो जाकर देखनी है।' आप सोचिये कि तब मार हो रहा था, लाठी चल रही थी, टिकट ब्लैक हो रहे थें ऐसे में ये दोनों बोलीं कि हमलोगों को तो जाकर देखनी है, ये चैलेन्ज है। बहुतों ने मना किया कि 'कहाँ मरने जा रही हो, बेकार का लाठी वगैरह लग गया तो' लेकिन उनका डायलॉग था कि ' ना, अपन को तो

माया शंकर जी और उनके पति पूर्व केंद्रीय मंत्री रवि शंकर प्रसाद जी (दाएं), अटल बिहारी वाजपेई जी के साथ

देखना है।' जिस दिन फिल्म लगी उस दिन हम जब कॉलेज से निकल रहे थें तो देखते हैं कि पटना वीमेंस कॉलेज के गेट से दो महिलाएं बुर्का पहने दाखिल हुईं। बाद में पता चला कि ये वही दोनों लड़कियां हैं जो फिल्म देखने की तैयारी करके आयी थीं और फर्स्ट डे फर्स्ट शो ये दोनों उसी भीड़ में जाकर देखकर आयीं। वे टिकट पहले ही मंगवा चुकी थीं। लेकिन उस मारा–मारी, उस भीड़ में टिकट लेकर घुसना भी टफ था। वहां ज्यादा भीड़ जेंट्स की ही थी तो हुआ ये कि दो–तीन बार उनके धक्का खाने के बाद किसी ने कहा– ' अरे माता जी आइये– आइये' और फिर भीड़ के ही लोग उन्हें आगे करते हुए हॉल में पहुंचा दिए। मतलब कॉलेज की किसी लड़की को हिम्मत नहीं हुई मगर इन दोनों ने अपना चैलेन्ज पूरा किया। मैं उन दिनों कॉलज की प्रीमियर भी रही। कॉलेज के संगीत प्रोग्राम में बैंजो और सितार बजाती थी। मैंने खुद जाकर रेडियो स्टेशन में ऑडिशन दिया और सेलेक्ट होने के बाद 'युववाणी' कार्यक्रम में कभी सितार तो कभी बैंजो बजाती थी। बैंजो मेरे मामा का था जो खराब पड़ा था। मैंने माँ से मांगकर खुद ही उसे ठीक किया, खुद ही उसका ट्यूनिंग किया और खुद ही उसे बजाना शुरू किया और उसी में ऑडिशन दिया। मुझे जो भी 25 रुपया मिला उससे मैंने बैंक अकाउंट खोला और उसमे प्रोग्राम से मिलनेवाला पैसा जमा करती थी। कुछ पैसा जमा होने पर उसी पैसे का मैंने अपने लिए दो कोर्ट बनवाया, एक ब्लू कलर का तो एक ग्रे कलर का। तब खुद के कमाए पैसे से अपने पर खर्च करते हुए मुझे गर्व महसूस हुआ था। कॉलेज में हम ड्रामा भी करते थें लेकिन जब मेरी शादी हुई तो हम प्ले करना बंद कर दिए। एक वजह यह थी कि तब घर–परिवार को ज्यादा समय देना चाहती थी और उन दिनों अच्छे घर की लड़कियां नाटक करने नहीं जाती थीं।

पटना यूनिवर्सिटी से एम.ए.करने के बाद 1980 में मैंने पटना वीमेंस कॉलेज में बतौर लेक्चरर ज्वाइन कर लिया। उसके पहले पांच–छह महीने मैंने रत्नापति विद्यामंदिर स्कूल ज्वाइन किया था जो 4 –5 क्लास तक था। ये बहुत बड़े साहित्यकार नलिन विलोचन शर्मा जी की पत्नी कुमुद शर्मा का स्कूल था। कुमुद शर्मा तब रेडियो के लिए होनेवाले कार्यक्रम 'शिशुमहल' में दीदी बनती थीं। वे बहुत सुन्दर पेंटिंग करती थीं, बच्चों की साइकोलॉजी पर बहुत काम की थीं, बच्चों का डांस–ड्रामा भी कराती थीं। उनके साथ ही लगकर मैंने भी बच्चों के कई नाटक कराये थें। कॉलेज में लेक्चरर फिर रीडर और फिर प्रोफेसर के रूप में सेवा देते हुए करीबन मुझे 26 साल हो गए हैं। जब लेक्चरर बनी तो शुरू की एक घटना याद आती है। पटना वीमेंस कॉलेज में नया–नया मुझे क्लास लेने जाना था। सिस्टर लुशेरिया उस समय प्रिंसिपल थीं। फर्स्ट टाइम क्लास लेने के वक्त मुझे थोड़ी

घबराहट हो रही थी। तो सिस्टर ने एक बात कही 'जाओ क्लास में और यह सोचो कि वहां जो भी स्टूडेंट बैठे हैं उन्हें कुछ नहीं मालूम और तुम्हें सब मालूम है।' फिर मैंने वही किया और यूँ ही करते–करते बहुत अच्छे से सब हो गया। मैं अपने कॉलेज डे में नाटक भी करती थी। कॉलेज में 'कला संगम' एक नाट्य संस्था थी उसके डायरेक्टर थें सतीश आनंद जो राष्ट्रिय स्तर की ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। उनके साथ मैंने बहुत सारे प्ले किये। 'आषाढ़ का एक दिन' ,'बल्लभपुर की रूपकथा', 'गोदान', 'आम्रपाली' ये सारे नाटक कॉलेज के ओपन स्टेज पर किया था। प्ले करने के बाद मुझमे बहुत कॉन्फिडेंस पैदा हुआ। कॉलेज में होने वाले प्ले के दौरान की एक घटना याद है। 21 दिसंबर, 1980 को प्रेमचंद की कहानी 'कफन' पर आधारित एक प्ले हुआ जिसका नाट्य रूपांतरण वरिष्ठ लेखिका पद्मश्री (स्व.) डॉ. उषा किरण खान ने किया था। मैंने उसमे माधव की भूमिका निभाई थी। तब ठंढ का समय था। जो लड़की माधव का रोल कर रही थी वो किरदार इतना डिफिकल्ट था कि वह नहीं कर पा रही थी। फिर सभी स्टूडेंट ने मुझसे कहा कि 'मैम पब्लिक शो होने जा रहा है, आप ही ये रोल कीजिये।' तब मैं ही उस प्ले का डायरेक्शन कर रही थी, फिर मैंने दो दिन में अपने किरदार पर तैयारी की। जब ये नाटक होने जा रहा था, मुझे स्टेज पर जाना था, दाढ़ी लगाकर, धोती–मुरेठा बांधकर मेरा मेकअप पूरा हो गया था। वहीँ कुछ कॉलेज कैंटीन के स्टाफ स्टेज से थोड़ी दूर हटकर आग जलाकर ताप रहे थें। हमने सोचा कि जरा मजा लिया जाये तो हम माधव के गेटअप में ही वहां जाकर बैठ गए आग तापने। सब घबरा गया और पूछना शुरू कर दिया कि 'कौन हो, कहाँ से आये हो, बाहर से कैसे आ गए, जाओ यहाँ से।' हम जवाब नहीं दिए और चुपचाप बैठकर आग तापते रहें। फिर जब उनलोगों ने टोका तो मैंने आवाज भारी करके कहा 'भाई ठंढ बहुत है, जरा सा आग ताप लेने दो गरमा जायेंगे।' एक ने कहा– 'यही जगह मिला है गर्माने का, जाइये बाहर जाइये। पता नहीं बाहर से कैसे आ गया है।' तब हमने कहा कि ' हम माया मैम हैं।' तब सब खड़ा हो गया और कहने लगा– 'बाप रे मैडम,ऐसा मेकअप।' मैंने कहा– जा रहे हैं नाटक करने' और उनको यूँ ही हैरत में डालकर मैं चली गयी।

उन्ही दिनों मैंने एन.सी.सी. के तीन कैम्प भी अटैंड किये। रिपब्लिक डे में हिस्सा लिया और मॉन्टियरिंग कैम्प भी किये। जब बी.ए. फाइनल ईयर में थी तो एन.सी.सी. के तहत मॉन्टियरिंग में 24 लड़कियों के पूरे ग्रुप में बिहार से हम दो ही लड़कियों का चयन हुआ था। क्यूंकि उनकी धारणा थी कि बिहार की लड़कियां स्ट्रॉन्ग नहीं होती हैं। ज्यादातर पंजाब, हरियाणा की लड़कियों पर फोकस रहता था। तो बिहार से एक मैं थी और एक थी शांता जेटली जो अभी भी एन.सी.सी. में अफसर हैं। जब हमलोगों की उत्तर काशी में ट्रेनिंग स्टार्ट हुई तो उसमे हमें रॉक क्लाइम्बिंग करना पड़ता था। नदियों को पार करना पड़ता था। फिर हमलोग बर्फ पर ट्रेनिंग किये। हफ्ता– दस दिन तो हमें ऐडजस्ट होने में लगा। नाश्ते–खाने में इतना कुछ रहता था लेकिन हमें ठंढ से भूख ही नहीं लगती थी। लगभग 20 किलो का वजन कंधे पर उठाकर हम सुबह निकलते थें और शाम तक एक पड़ाव पर पहुँचते थें। दिनभर पैदल चलने के क्रम में पैर में छाले पड़ जाते थें। मेरे पैर का अंगूठा लगभग डेड हो गया था। घरवालों को यही बताये थें कि हमें मॉडल पहाड़ पर चढ़ाया जायेगा क्यूंकि जब बताते कि रियल पहाड़ पर चढ़ना है तो हमें जाने की अनुमति ही नहीं मिलती। हम लोग कितने दिन तक नहाये नहीं थें। जब हमलोग एक महीने बाद लौटें तब जाकर नहाना हुआ। मैं तब एकदम ब्लैक हो गयी थी, घर में कोई पहचान नहीं पाया।

70 के दशक में जब हम कॉलेज में पढ़ रहे थें, 1974 –75 में मोतिहारी में बाढ़ आयी थी और काफी तहस–नहस हुआ था। उस समय मेरा फाइनल ईयर था और कॉलेज की मैं प्रीमियर थी। हमने प्रिंसिपल से कहा कि हम चाहते हैं कि कुछ बाढ़ राहत संबंधी काम करें। कॉलेज के एक सेन्ट्रल पॉइंट पर ताला लगाकर एक मनी बॉक्स डाल दिया गया। सारे क्लास में जाकर कहा कि आपलोग 10 –20 पैसा, चवन्नी–अठन्नी कुछ भी डाल दो। फिर कॉलेज से निकलने से पहले बॉक्स खोलकर काउंट करते थें। हमने स्टूडेंट से कहा कि आप कुछ भी नहीं दे सकते तो घर में न्यूज पेपर आता होगा, एक पुराना न्यूज पेपर ही लाकर दे दें। फिर न्यूज पेपर कलेक्ट करके उसे कबाड़ी में बेचकर उससे पैसे इकट्ठा किए। उसके बाद हमने सिस्टर को मनाकर कॉलेज में एक प्रोग्राम आयोजित करवाया जिसमे पहली बार दूसरे कॉलेज के लड़के भी टिकट खरीदकर देखने आये थें। सिस्टर इसी टेंशन में थीं कि लड़कियों का कॉलेज है, बॉयज आएंगे तो हंगामा करेंगे, क्या होगा.. ? लेकिन हमने उन्हें भरोसा दिलाया कि कुछ नहीं होगा। फिर सबके सपोर्ट से दो दिन हुए प्रोग्राम में हॉल पूरा भरा रहा। वहां एक सिस्टर प्रोग्राम के दौरान हॉल में जहाँ अँधेरा था रह–रहकर वहां टॉर्च जलाकर देखतीं कि कहीं कोई लड़का कुछ गड़बड़ तो नहीं कर रहा है। लड़कियों के लिए फ्री था लेकिन लड़के 1 रूपये का टिकट लेकर खूब शौक से बन–ठन के देखने आये थें। इसके अलावा हमने गुरुदत्त की फिल्म 'प्यासा' का चौरिटी शो कॉलेज में करवाया जिससे भी पैसे इकट्ठे हुए। उसके बाद हमलोगों ने नयी धोती–साड़ी, अनाज और दवाइयां खरीदकर एक वैन में भरकर दो टीचर और चार लड़कियों का ग्रुप लेकर मोतिहारी गए और दो दिन रहकर

पीड़ितों की मदद की। 6 गांव कवर करके हमने खुद अपने हाथ से चीजें बांटी। कॉलेज के दिनों में ही पहली बार गर्ल्स का क्रिकेट हमने शुरू करवाया। प्रिंसिपल ने कहा– 'यह लड़कों का खेल है, आप हॉकी खेलें क्रिकेट नहीं।' लेकिन हमलोगों ने कहा– 'नहीं, हम क्रिकेट खेलेंगे।' इसलिए कि हमलोगों को एक बहुत अच्छा कोच मिल रहा था। फिर ओके होते ही हमलोग छाबड़ा स्पोर्ट्स की दुकान पर गए और क्रिकेट के सारे सामान खरीद लाएं। हमने खुद ही पिच बनाया। हमारे कॉलेज में एक क्रिकेट टीम बनी जिसकी मैं विकेटकीपर और वाइस कैप्टन बनी। एक क्रिकेट टीम मगध महिला कॉलेज में बनी। दो मैच हुए थें और दोनों ही हमने जीता।

हम और मेरे हसबेंड श्री रवि शंकर प्रसाद जी (पूर्व केंद्रीय मंत्री) एक ही बैच के थें। मेरा हिस्ट्री ऑनर्स तो उनका पोलिटिकल साइंस था। पहले मेरे हसबेंड की तरफ से ही प्रपोजल था लेकिन मैंने कहा– ' मैं अभी शादी नहीं करना चाहती' और टालती रही। लेकिन फिर उनका काफी प्रेशर हुआ तो कुमुद शर्मा जिनके स्कूल में मैं पढ़ाती थी और जो हम दोनों की ही मित्र थीं, वो बोलीं कि 'देखो शादी उसी से करो, जो तुमको सबसे ज्यादा चाहता हो।' तो फिर हमने हाँ कर दिया और 1982 में हमारी शादी हो गयी। एक और प्लस पॉइंट ये हुआ कि हमारे ससुर और पिता जी दोनों हाईकोर्ट में लॉयर और मित्र थें, परिवार जाना हुआ था। ऐसा संयोग हुआ कि हम अखिल भारतीय महिला परिषद् में मेंबर थें जिसमे बाद में सचिव बने। ये पहला ऑर्गनाइजेशन था जो 1927 में महिलाओं द्वारा और महिलाओं के लिए बना था। वहां कभी–कभी सावन मिलन और होली मिलन जैसे कार्यक्रम होते थें। तो गाने –बजाने में मुझे शुरू से ही मन लगता था। वहां मेरी सासु माँ बहुत अच्छा गाती थीं। हम तब कार्यक्रम में ढ़ोलक बजाते थें। तब हम ये नहीं जानते थें कि यही मेरी सासु माँ बनेंगी। वहां अनौपचारिक तरीके से हमारी मुलाकात होती थी। वे अपनी गाने–बजाने की पूरी टीम लेकर आती थीं। तब मुझे कहाँ पता था कि मैं इन्ही के घर बहू बनकर जानेवाली हूँ। मेरे लिए यह भी एक नया अनुभव रहा कि मुझे पोलिटिकल फैमली की बहू बनना पड़ा। मेरे ससुर जी इंडस्ट्रीज मिनिस्टर और जनसंघ के काफी प्रमुख संस्थापक में से रहे हैं। ससुराल में अटल बिहारी वाजपेयी, आडवाणी जी, मुरली मनोहर जोशी जी का बराबर आना–जाना लगा रहता था।

जब हम शादी के बाद सुबह ससुराल आये तो तय हुआ कि शाम में मेरा सितारवादन होगा। मैं तो घबरा गयी, बहाना किया कि मैं तो सितार लायी नहीं हूँ। लेकिन सासु माँ ने एग्जीबिशन रोड स्थित मेरे मायके से सितार मंगवा लिया। फिर ड्राईंग रूम में मेरा सितारवादन का कार्यक्रम हुआ। सासु माँ ने कहा कि 'देखो, मेरे यहाँ का चलन है कि जो बहू आती है वो गाती है। मैंने कहा– हम तो गाते नहीं हैं, हम तो बजाकर सुना देंगे।' लेकिन उनकी जिद की वजह से मैंने थोड़ा सा होली गीत गा दिया। तब पूरा घर मेहमानो से भरा हुआ था। जब शादी की चहल–पहल सब खत्म हुई तो हमलोग हनीमून के लिए गोवा चले गए। मैं अक्सर ससुराल में देखती कि घर पोलिटिकली लोगों से भरा रहता है। मैं नयी बहू थी इसलिए जितने भी लोग मौजूद होते सबको पैर छूकर प्रणाम करना पड़ता। अच्छी–खासी एक्सरसाइज हो जाती थी। आजकल की लड़कियों का देखते हैं कि वे अलग माहौल मिलते ही तुरंत पेशेंस खो देती हैं। जरा सा भी वक्त नहीं देतीं, एडजस्ट नहीं करतीं। जॉब करनेवाली आती हैं तो सोचती हैं कि हम क्यों झुकें, लेकिन यह गलत है। हमलोग भी जॉब करते थें। मैं तो शादी के पहले से ही नौकरी में आ गयी थी। फिर भी मैंने बाहर और घर दोनों संभाला। आजकल तो देखती हूँ कि शादी के चार महीने, साल भर भी नहीं हुए और डायवोर्स हो गया जबकि यह हमारा कल्चर नहीं है। क्यूंकि खूबसूरती सबको साथ लेकर चलने में ही है। परिवार में बहुत बड़ी शक्ति होती है। आप दूसरे घर में जाते हैं तो हर घर का अलग कल्चर होता है। आजकल तो अच्छा है कि इंटरकास्ट मैरेज हो रहे हैं, मुझे खुशी है इस बात की। लेकिन पहले एक समय था कि एक ही कास्ट में, एक ही समाज में शादी हो रही है फिर भी बहुत सारी चीजों में अंतर देखने को मिलता था। तो थोड़ा सा सभी को एडजस्ट करके चलना चाहिए। मेरा बेटा हुआ तब मैं पटना वीमेंस कॉलेज में पढ़ा रही थी। मैं बच्चे को छोड़कर जाती थी। मेरी गैर मौजूदगी में बेटे की देखभाल मेरी सासु माँ कर दिया करती थीं इसलिए मैं पूरी तरह से निश्चिंत रहती थी। मैं कॉलेज से थकी हारी आती तो देखती कि घर में पॉलिटिकल लोगों की भीड़ लगी है। नौकर–चाकर होते हुए भी मैं खुद जाकर देखती कि सभी को ठीक से नाश्ता–पानी मिला कि नहीं। और घर की बड़ी बहू होने के नाते मैं इसे अपना दायित्व समझती थी। मुझे याद है कि एक रोज मैं सासु माँ को बोलकर निकली कि जरा सा माँ के यहाँ होकर आती हूँ। मैं रिक्शे से निकली और माँ के यहाँ जैसे पहुंची तो उसी टाइम ससुराल से फोन आ गया कि 'बेटा, अटल जी आ रहे हैं तो तीन–चार लोगों का खाना देखना होगा।' मैं उसी समय माँ को बताकर वापस लौट गयी। चूँकि अटल जी को मछली बहुत पसंद है इसलिए रास्ते में ही मछली खरीदते हुए मैं घर पहुंची। नौकर– चाकर थें घर में मगर अटल जी को मछली मैं खुद बनाकर खिलाती थी। सबसे बड़ी बात तब मुझे ये लगी कि मेरे सास–ससुर को भी यह एहसास हुआ कि उस मौके पर माया को घर में होना चाहिए तभी तो उन्होंने मुझे याद किया। तो यही होता है परिवार का प्यार और अपनापन। ❐

शूटिंग के दौरान एक सनकी ने मेरा हाथ पकड़ लिया था : गार्गी पंडित (प्रियंका), भोजपुरी फिल्म अभिनेत्री

मेरी पहली भोजपुरी फिल्म थी 'जीना तेरी गली में' जिसके डायरेक्टर थे राज कुमार पांडेय। तब तीन लैंग्वेज में एक फिल्म बनी थी गुजराती, नेपाली और भोजपुरी में और मैंने गुजराती वाले वर्जन में एक गाना किया था। तो उसी के म्यूजिक लॉन्चिंग में हम सभी मुंबई आये थें। इससे पहले मैं गुजराती फिल्में करती थी। उस लॉन्चिंग पार्टी में राजकुमार जी पहली बार मुझसे मिले। उनको मेरा काम पसंद आया था। उन्हें अपनी टीन एज लवस्टोरी फिल्म के लिए फ्रेशर लड़की की तलाश थी। उन्होंने मुझे अपनी उस फिल्म के लिए चुन लिया। फिल्म की शूटिंग कुछ दिन मुंबई में फिर बिहार के मोतिहारी, सीतामढ़ी और फिर आगरा के लोकेशंस पर हुई। मैं बिलॉन्ग तो जौनपुर, यू. पी. से करती हूँ लेकिन मैं जब डेढ़ साल की थी तभी से गुजरात में रहने लगी। जब भोजपुरी का नाम आया तो फैमली की तरफ से काफी ऑब्जेक्शन आने लगें। 'जीना तेरी गली में' करने के बाद मुझे डैडी ने एक साल तक भोजपुरी में काम नहीं करने दिया। उस समय मेरी 12 वीं की पढ़ाई भी चल रही थी और मैंने अपनी ये पहली भोजपुरी फिल्म डैडी को बताकर नहीं की थी। जब वे जान गएँ तो उनका कहना था कि "भोजपुरी ना करो, कोई और लैंग्वेज करो।" लेकिन किस्मत में शायद मेरा भोजपुरी फिल्मों में ही आना लिखा था। होता ये है कि अलग इंडस्ट्री से ऑफर आता है तो लगता है कि एक बार करना चाहिए। और फिर इतने बड़े डायरेक्टर को ना भी नहीं बोल सकते। भोजपुरी को लेकर तब मेरी तैयारी कुछ भी नहीं थी लेकिन उन्होंने कहा था कि मैं संभाल लूंगा। भोजपुरी मैंने सीखी भी नहीं थी, मुझे आज भी बोलने में प्रॉब्लम होती है। उन्होंने कहा– "बस परफॉर्मेंस अच्छा होना चाहिए, डबिंग तो हम किसी से भी करवा सकते हैं।"

मुझे उन्होंने एक महीने का टाइम दिया था। मैं रवि किशन और मनोज तिवारी जी को ही जानती थी। फिर उन्होंने सलाह

दिया कि रानी चटर्जी, रिंकू घोष और पाखी हेगड़े जी की फिल्में देखो। तब मैंने कई सारे लोगों की फिल्में देखीं फिर धीरे–धीरे कॉन्फिडेंस आया। पहले दिन जब गयी शूटिंग पर तो पहला ही सीन प्री– क्लाइमेक्स व मेरा डेढ़ पेज का डायलॉग और वो भी भोजपुरी में था। वहां अवधेश मिश्रा, संजय पांडेय, सुशिल सिंह, रिंकू घोष जैसे जमे–जमाये एक्टर्स के सामने परफॉर्म करने में बहुत ज्यादा नर्वस फील कर रही थी। फिर पता नहीं कितने रीटेक,कितने रिहर्स्ल और चार घंटे से एक ही चीज चल रही थी, खत्म ही नहीं हो रहा था। वो मेरी लाइफ का सबसे बैड एक्सपीरियंस था। फिर कैसे भी करके सीन खत्म किया और ऐसा लगा जैसे गंगा नहा लिए। पहले ही सीन के बाद मैंने डायरेक्टर साहब को बोल दिया कि मुझसे इतनी सारी भोजपुरी नहीं बोली जा रही है, मुझे प्रॉब्लम हो रही है और गानों के परफॉर्मेंस में भी बुरा हुआ। मैं बीट नहीं समझ पा रही थी, मैं गाने नहीं समझ पा रही थी। यहाँ तक कि क्या रिएक्शन देना है, क्या करना है वो भी नहीं। उसके बाद मैंने कहा कि मुझे छोड़ दो, मैं नहीं कर सकती। उन्होंने मुझे 5 महीनों के लिए साइन किया था। कैसे वो फिल्म मैंने खत्म की मैं ही जानती हूँ। डायरेक्टर साहब ने कहा– "मैं सिखाऊंगा।" फिर धीरे–धीरे मैं सीखने लगी। वह फिल्म हिट हुई और 2013 की सबसे बड़ी फिल्म साबित हुई।

शूटिंग का एक और वाक्या सुनाती हूँ। बिहार के मोतिहारी जिले में जब गाने की शूटिंग हो रही थी हजारों पब्लिक के बीच में मुझे डायरेक्टर ने माइक लेकर बोला था कि "तुम इतनी बड़ी नल्ली हो मुझे नहीं पता था। मैं तुम्हें रिप्लेस कर दूंगा। अब मैं नहीं चाहता कि तुम ये फिल्म करो।" मैंने भी गुस्से में बोला– "आप मुझे निकाल दीजिये, मुझे भी नहीं करनी है।" फिर फिल्म की प्रतिष्ठित अभिनेत्री रिंकू घोष ने डायरेक्टर को समझाया कि "राज जी, हमलोग भी जब आपके सामने परफॉर्म करते हैं तो हमे भी डर लगता है। और वो तो बच्ची है, उसे तो ज्यादा कुछ आता भी नहीं है। अगर उसके सामने आप अभी से इतने रुड हो जाओगे तो वो नर्वस हो जाएगी और कभी नहीं कर पायेगी।" उसके बाद उनका तेवर नरम हुआ और फिर वो मुझे बहुत अच्छे से समझाने लगें।

तब मैं पहली बार बिहार शूटिंग करने गयी थी। मोतिहारी के ही बस स्टॉप पर एक सीन की शूटिंग कर रहे थें। काफी भीड़ –भाड़ वाली जगह थी। एक सीन के खत्म होते ही हम जा रहे थें कि तभी पता नहीं एक बन्दे ने मेरा पूरा हाथ पकड़ लिया और छोड़ ही नहीं रहा था। इतने सरे लोग घेरकर हीरो–हीरोइन को लेकर जा रहे हैं और उसी बीच उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। मैंने छुड़ाने की कोशिश की तो भी वो छोड़ नहीं रहा था। उसके हाथ पर लोगों ने मारा मगर वो मेरा हाथ छोड़ने को तैयार ही नहीं था। तब मेरा हाथ भी घायल हो गया। जब एस.आर.पी.एफ वाले बुलाये गए तब मेरी जान बच पायी। ढ़ाई घंटे शूटिंग रोकनी पड़ी थी। नेक्स्ट डे जब हमलोगों की गाड़ी वहां से निकल रही थी वो सनकी बंदा बीच में खड़ा होकर बोल रहा था "देख लेंगे हम तुमको"। तो वह उसकी पहलेवाली हरकत से भी डरावना मोमेंट था, जिसे मैं आज भी याद करती हूँ तो एक पल के लिए रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ❐

प्रस्तुति : राकेश सिंह 'सोनू'

पहले जहाँ रिश्ता कैंसल हुआ बाद में वहीं मेरी शादी हुई

स्मिता गुप्ता, मॉडल एवं टीवी एंकर (दूरदर्शन बिहार)

एक दिन अचानक मेरी एक फ्रेंड ने कहा कि "मिसेज ग्लोबल बिहार होने जा रहा है ट्राई करोगी?" मैंने कहा– "ये सब मॉडलिंग–वॉडलिंग मेरे से नहीं होगा।" जब पटना वुमनिया क्लब का डांडिया नाइट प्रोग्राम हो रहा था मैं डांडिया इंज्वाय करने दोस्तों के साथ गयी थी। वहां पर मिसेज गोल्बल बिहार के लिए नीतीश चंद्रा ऑडिशन ले रहे थें। मैंने भी यूँ ही ऑडिशन दे दिया मगर डिसाइड नहीं था कि मुझे भी करना है। उसके बाद 2 महीने थे मरे पास ये डिसाइड करने के लिए कि हाँ या ना। तीन–चार बार नीतीश चंद्रा से मेरी टेलीफोनिक बात हुई। वे पूछ रहे थें कि "क्या करना है..?" लेकिन तब फैमली में भी लोग ठीक से बता नहीं पा रहे थें। हसबेंड और भाई से पूछा तो दोनों ने कहा– "देख लो, मुझे समझ में नहीं आ रहा है।" फिर करते–करते इतना समय बीत गया कि अब 5 दिनों का ग्रूमिंग सेशन शुरू हो चुका था। फिर मैं फर्स्ट डे ग्रूमिंग में गयी और सिर्फ बैठकर देखी कि क्या हो रहा है। उसी दिन हमारी किट्टी पार्टी थी फ्रेंड्स के साथ। वहां उनलोगों से बात हुई तो सबने कहा– "तुम में टैलेंट है। हो सकता है यहाँ से तुम्हारा टर्निंग पॉइंट आ जाये और तुम इसी लाइन में आगे बढ़ जाओ।" फिर मैंने डिसाइड किया कि मुझे करना है। तब मेरे हसबेंड के पैर का अंगूठा फ्रैक्चर हो गया था और वो बेडरेस्ट में थें। वे मेरे साथ जा–आ तो नहीं सकते थें फिर भी मोरली उन्होंने मेरा बहुत सपोर्ट किया। तब अपने दो बच्चों को छोड़कर ग्रूमिंग के लिए घर से निकलना होता था और लगभग पूरा–पूरा दिन बीत जाता था। तब हम सिंगल फैमली में थें इसलिए उस वक्त मुझे सारा कुछ अकेले ही मैनेज करना पड़ा। तीन–चार दिन मैंने ग्रूमिंग क्लास किया। और 18 दिसंबर, 2016 को वह शो हुआ जहाँ मैं मिसेज ग्लोबल बिहार की फर्स्ट रनरअप रही।

उसके बाद फिर सबका सपोर्ट मिलने लगा। फिर तुरंत हम सभी तीनो प्रतिभागिओं का दूरदर्शन के बिहार बिहान में लाइव शो हुआ। इस सफलता के बाद लोगों का एक्सपेटेशन मुझसे बढ़ गया। फ्रेंड्स पूछते– "अब क्या कर रही हो अगला स्टेप क्या है..?" यह सोचकर डिप्रेशन भी होता था कि अरे अब क्या करें, पटना में कोई स्कोप नहीं है, क्या कर सकते हैं लेकिन जो भी मिलता वही पूछता, हम परेशान हो गए। मैंने पत्रकारिता का कोई कोर्स नहीं किया था फिर भी कुछ समय बाद मैं बिहार न्यूज में गयी। वहां न्यूज एंकरिंग किए। उसके बाद मैं पटना दूरदर्शन की सहायक निदेशिका से मिली। उन्होंने मुझपर भरोसा करके बिना कोई इम्तहान लिए अपने लाइव शो 'एक मुट्ठी धूप' (तब जिसका नाम फुर्सत घर था) में बैठा दिया। तब से मैं उसी शो में कंटीन्यू एंकरिंग कर रही हूँ।

ससुराल में मेरे सास–ससुर नहीं थें। मेरे हसबेंड चार–भाई और तीन बहन हैं। वे सबसे छोटे हैं। मेरी ननदें मेरे पापा–मम्मी की उम्र की थीं। मतलब पति के भाई–बहनों से हमारा एज गैप नहीं बल्कि जेनरेशन गैप था। शादी हुई थी हमारी 2002 मई में, अब 16 साल हो गएँ इस रिश्ते को। मेरी दीदी के ससुराल से मेरे पति का रिलेशन था। मैं इंटर में थी तो बैंकिंग की तैयारी कर रही थी। मुझे एक्जाम देने एम. पी. के कटनी जाना था। छठ के लिए तब मेरी सारी फैमली गया से शेरघाटी जा चुकी थी। और मैं दीदी के यहाँ रुक गयी थी क्यूंकि छठ के अगले ही दिन मुझे ट्रेन पकड़नी थी। मेरे हसबेंड भी तब दीदी के ससुराल आये हुए थें। सुबह का अर्घ्य देने के दिन वो मुझे देखें तो फिर अपने घर से अपनी बहन को भेजें कि मुझे इस लड़की से शादी करनी है। उस वक्त मेरे रिश्ते की बात कहीं और चल रही थी। उनलोगों को हम पसंद थें और सबकुछ फाइनल था कि बस अब इंगेजमेंट होना है। वो भी बहुत कम समय में 10–15 दिनों के अंदर हुआ। तब

मम्मी ने कहलवा दिया कि "नहीं, इसकी शादी तो फाइनल हो चुकी है।" लेकिन बाद में पापा–मम्मी को कुछ पता लगा फिर वो रिश्ता कैंसल कर दिया। और जब यह बात मेरे हसबेंड को पता चली तो फिर से उन्होंने अपना रिश्ता भेजा। तब इनकी पूरी फैमली मुझे देखने आयी थी। जब हमारे तरफ से पूछा गया कि "फाइनली क्या करना है ?" तो मेरे हसबेंड के ब्रदर इन लॉ बोले– "हाँ–ना तो पहले ही हो चुका है. अब जब लड़का बोल दिया कि मुझे शादी करनी है और यहीं करनी है तो हमलोग तो बस फॉर्मेलिटी के लिए आये हैं कि चलो एक बार जरा फैमली से मिल लें।" और तब हमारे घरवाले इतने श्योर नहीं थें कि वो लोग बिल्कुल फाइनल ही करने आये हैं। पहले एक ट्रेडिशन चला था कि लड़की देखने जो आते थें पता नहीं क्यों उससे इंग्लिश में कुछ लिखवाते थें शायद यह जानने के लिए कि लड़की पढ़ी–लिखी है या नहीं। मुझसे भी लिखवाया गया। मैंने इतने इंग्लिश वर्ड पेज में भर दिए कि अब आप पढ़ते रहो। और मुझे गुस्से के साथ–साथ हंसी भी आ रही थी। उतने में मेरी ननद बोलीं कि "चलो टेरिस पर चलते हैं." साथ में टेरिस पर हसबेंड के भाई की बेटी भी थी। वहां मुझसे बात करने के दौरान उन्होंने मेरे हाथ–पैरों को इतने गौर से देखा कि मुझे सब समझ में आ गया। यह देखने की रस्म दीदी के घर पर हो रही थी। उनलोगों के जाते ही मैं दूसरे कमरे में कपड़े चेंज करने गयी और फिर आकर रोते हुए यह बोली कि "हम इस फैमली में शादी नहीं करेंगे, ये कोई तरीका है देखने का।" मम्मी को बोलकर कि तुमलोग रहो, हम जा रहे हैं और गुस्से में पैर पटकते हुए नीचे उतर गई, रिक्शा बुलाई और फिर अकेले ही अपने घर निकल गयी। बाद में उनलोगों का फोन आया कि "ठीक है, ये सब होता है, नार्मल चीजें हैं।" लेकिन वो मेरे लिए नार्मल नहीं था। कई लोगों ने तब मम्मी–पापा को ये भी समझाया था कि "यह शुरू से सिंगल फैमली में रही है, इसकी आप ज्वाइंट फैमली में शादी कर रहे हैं?"

लेकिन पता नहीं क्यों उसके बाद भी मेरी शादी वहां हो गयी। वो कहते हैं ना जोड़ी ऊपर से बनकर आती है। कहीं–ना–कहीं अप्स एन्ड डाउन होते हुए मार्च में इंगेजमेंट हुआ और मई में हमारी शादी हो गयी। सबसे अच्छी बात शादी में ये हुई थी कि मेरे हसबेंड रंजीत ने बोला था हम दहेज नहीं लेंगे और वो नहीं लिए। इन सब चीजों ने कहीं–ना–कहीं मुझे मेरे हसबेंड और इनकी फैमली से जोड़ा। शादी के एक महीने तक हम गया में ही थें। कई बार हमलोगों का प्लान बना घूमने जाने का लेकिन कैंसल हो जा रहा था। उसी टाइम रिलेशन में एक शादी थी राजस्थान में तो प्लानिंग हुई कि हम दोनों ही वहां चले जाएँ। इसी बहाने हमारा घूमना भी हो जायेगा। उस टाइम फिर लोगों ने प्लान चेंज कर दिया। और मेरे घर की सारी फैमली गयी लेकिन हम नहीं गएँ। फिर मुझे बड़ा धक्का लगा कि सबलोग गएँ मुझे छोड़कर। मन में एक टीस थी कि मायके में तो मम्मी–पापा हमलोगों को कहीं भी साथ लेकर जाते थें और यहाँ तो हमें छोड़कर जा रहे हैं। बहुत गुस्सा अंदर से था। फिर दो महीने बाद हम दिल्ली, चंडीगढ़, कुल्लू–मनाली ये सभी जगह गएँ। तब थोड़ा गुस्सा शांत हुआ कि चलो हम कहीं तो घूमने निकलें बाहर।

मुझे ससुराल में एडजस्ट करने में बहुत ज्यादा प्रॉब्लम हुई। क्यूंकि उनकी सोच थी कि आजकल की लड़की आ रही है। उन्होंने पहले से ही मेरे लिए एक मेंटिलिटी बना रखी थी। लेकिन फिर कुछ समय बाद वो फैमली मेरे लिए इतनी क्लोज हो गयी कि अब हम सभी एक–दूसरे से बहुत ज्यादा प्यार करते हैं. लेकिन उस टाइम चूँकि हमारा भी एज कम था, एक्सपेक्टेशन मेरा बहुत था कि मुझे भी ये चीज मिलनी चाहिए। बचपना बहुत ज्यादा था। तब मेरे पति के बहुत से रिलेटिव जो मेरे हमउम्र थें बोलते थें कि– "ये लड़की मेरे घर आनी चाहिए थी, मेरे साथ शादी होनी चाहिए थी।" सुनकर अच्छा लगता था।

दो साल बाद जब मैं प्रेग्नेंट हुई तो घर में बहुत सारी प्रॉब्लम हुई। वो पूरे 9 महीना हम पूरे डिस्टर्ब रहें क्यूंकि उस वक्त मुझे बहुत से लोगों का सपोर्ट नहीं मिला जो हम एक्स्पेक्ट किये थें। मेरी शादी के एक साल बाद से ही मेरे पापा हॉस्पिटलाइज रहने लगे थें और एक दिन उनका देहांत हो गया। उस बुरे वक्त में हसबेंड के आलावा मुझे और लोगों का उतना सपोर्ट नहीं मिला और यही सोचकर मैं तब दुखी रहती थी। तब पापा के देहांत के एक महीने बाद मुझे पता चला कि मैं प्रेग्नेंट हूँ। एक अच्छी और बुरी खबर एक साथ आयी थी। घरवालों को मेरे माँ बनने की खुशी थी तो वहीँ मुझे पापा को खो देने का गम था। तो वो चीज हमें अंदर से बहुत कमजोर भी बनाई और मजबूत भी। उस वक्त मेरे हसबेंड जब मुझे मायके से लेने आये थें तो मेरे दिल की धड़कने बढ़ गयीं कि मुझे फिर से वहां जाना होगा, उस माहौल में जहाँ जेनरेशन गैप है। फिर धीरे–धीरे मैं एडजस्ट करती चली गयी और तब बहुत से अप्स एन्ड डाउन के बाद फिर सबकुछ अच्छा हो गया। बाद में वही फैमली कहने लगी कि अगर शादी करनी है तो ऐसी ही लड़की होनी चाहिए। तब हम फैमली से अलग हुए तो बस जॉब के लिए हुए, आज भी हम फैमली से साथ बहुत क्लोज हैं। ❐

लोगों ने टोका था मुझे कि कबाड़ का बिजनेस औरत नहीं करती है : किरण, कबाड़ीवाली

हमारा बचपन बहुत दर्दनाक गुजरा। जब मेरी उम्र 8 साल की थी मेरे पापा का देहांत हो गया। सदमे से मेरी माँ दिमागी संतुलन खो बैठी। समझ में नहीं आ रहा था कि हमलोगों की परवरिश कैसे होगी। हमारे चाचा लोगों का हमलोगों के प्रति व्यवहार अचानक बदल गया। वो लोग तीन–चार रोटी देते तो उसी में हम तीनो बहनें खाती थीं। फिर जब हमारी माँ ठीक हो गयी तो अस्पताल में काम करने लगी। वहां से जो भी कमाकर लाती तो थोड़ा बहुत खाने–पीने पर खर्च होता। स्कूल के प्रिंसिपल बोले कि "हमारे पिता अच्छे थें। अब जब नहीं रहें तो हमलोगों का फर्ज बनता है कि उनके बच्चों को पढ़ाएं। तीन बच्चा फ्री में पढ़ेगा तो हमलोगों का लॉस नहीं होगा।" बाद में जब हमलोग 5वीं क्लास में गएँ तो फिर स्कूलवालों के मन में बदलाव आने लगा क्योंकि हमारे साथ अच्छे ढंग से बात नहीं किया जाता था, भेदभाव किया जाता था। तब हमलोग घर आकर रोते थें, माँ से कहते कि हम स्कूल नहीं जायेंगे। बाद में हम सरकारी स्कूल बांकीपुर में गएँ तो वहां मेरा एन.सी.सी. में चुनाव हुआ। लेकिन हमारे चाचा लोग उसमे करने नहीं दिए और स्कूल जाना भी छुड़वा दिए। तब हमलोगों का भाड़े पर 25 रिक्शा चलता था लेकिन पिता के नहीं रहने पर चाचा लोग धीरे–धीरे करके बेच दिए। उनके अपने बच्चे बैठे रहते थें और वे हमलोगों से अपना काम

कराते थें। फिर चाचा लोगों ने हमारी माँ को बहुत मारना–पीटना शुरू कर दिया। हम तीनों बहनों को घर में बंद कर देते थें। जब हम 12–13 साल के हुए तो हमसे माँ को प्रताड़ित किया जाना बर्दाश्त नहीं हुआ। एक बार आधी रात में वो माँ को मार रहे थें। जब मैं मदद मांगने घर से निकलकर भागने लगी तो मुझे भी मारकर चोटिल कर दिया गया। उसी दिन मेरे में शक्ति आयी कि जब मेरी माँ के साथ ऐसा अत्याचार हो रहा है तो अब हम बर्दाशत नहीं करेंगे। मैं दीवार फांदकर थाने में गयी और पुलिस को साथ ले आयी. चाचा लोगों को पुलिस पकड़कर ले गयी। बाद में वे लोग रिश्वत देकर छूटकर तुरंत वापस आ गए। आने के बाद हमलोगों से फिर मारपीट किया। हमे ऐसी दर्दनाक स्थिति में देखकर माँ ने कम उम्र में ही मेरी शादी करा दी। ससुरालवालों ने एक पैसा दहेज नहीं लिया। दहेज को लेकर बाद में मेरे ससुर थोड़े नाराज हुए लेकिन मेरे पति और मेरी सास बहुत सपोर्टिव निकलीं। उनलोगों का सपोर्ट है कि आज हम दुनिया को देख पा रहे हैं। सास के साथ हमारा माँ–बेटी का रिश्ता बन गया। हमारी सास को देखकर कई लोगों ने सीखा कि बहु को कैसे रखना चाहिए। हम तो ससुराल आ गए उधर हमारी दोनों छोटी बहनों को माँ के साथ चाचा के परिवारवालों ने घर से निकाल दिया। फिर मेरी माँ अपना घर,जमीं सब छोड़कर कहीं और किराये पर रहने लगी। आगे चलकर मेरी एक बहन आर्मी में चली गयी तो दूसरी आंगनबाड़ी में सहायिका का काम करने लगी।

मेरा ससुराल पटना के बुद्धमार्ग स्थित शांति आश्रम के पास है। पहले मेरे सास–ससुर का तारामंडल के पास एक चाय की दुकान थी। मैं वहां जाकर थोड़ी हेल्प कर देती थी। वहां जो दूध का पॉलीथिन आता था उसी से मेरे अंदर ये आइडिया आया कि मैं कबाड़ी

का बिजनेस करूँ। एक दिन एक सज्जन जो हमारी चाय की दुकान पर आते थें जो लोहे के होलसेलर थें, उन्होंने बताया कि "आप ये थोड़ा–थोड़ा करके जो दूध का पॉलीथिन बेचते हैं इसको एक जगह इकट्ठा करके बेचिएगा तो आपको अच्छा इनकम होगा और उससे प्रॉफिट थोड़ा ज्याद होगा।" हम भी देखते थें ठेलेवाले को शीशी–बोतल सब लिए हुए तो हमने कहा कि "क्यों नहीं हमलोग भी एक दुकान खोल लेते हैं और अपना बिजनेस करें। हम जो ठेलेवाले को देते हैं होलसेलर वाले को देंगे तो प्रॉफिट ज्यादा होगा।" मन में ख्याल आया लेकिन पूंजी हाथ में नहीं थी। परिवारवाले तो तैयार हो गए लेकिन अड़ोस–पड़ोस वाले टोकने–मना करने लगें कि "नहीं ये औरत का काम नहीं है। नयी बहु है, पढ़ी–लिखी है तो सोच रही है हम बहुत एडवांस चलें। कबाड़ी का बिजनेस थोड़े ही औरत करती है।" लेकिन हमारी सास आगे आकर बोलीं कि "एक बार सपोर्ट करने में क्या हर्ज है। पढ़ी–लिखी है, हिसाब–किताब तो करेगी और माल तो लड़का लोग ले आएगा।" यही सब सोचकर हमलोगों ने निदान से लोन लिया। उस समय 2001 में कबाड़ी का दुकान किये। शुरू–शुरू में मेरे पास एक ठेला आता था फिर धीरे–धीरे 10 ठेले का माल आने लगा। एक साल तक बहुत परेशानी हुई फिर सब ठीक हो गया। शुरू में मेरे पास स्टाफ नहीं था लेकिन अब कुछ स्टाफ हैं जिससे मुझे थोड़ी सहूलियत मिलती है। इसके बाद हमारे पास से भाड़े पर रिक्शा चलने लगा। दो तीन साल बाद जब काम आगे बढ़ने लगा तो उसके बाद हम ऑटो रिक्शा लोन पर लिए। एक रिक्शे से 10 रिक्शा हुआ। मेरे हसबेंड प्रीपेड ऑटो रिक्शा एयरपोर्ट से चलाने लगें। लेकिन जिंदगी का संघर्ष इतना आसान भी नहीं था। बीच में बहुत बुरे दौर से गुजरना पड़ा।

करीब 4 साल पहले जब बिजनेस थोड़ा लॉस में चला गया तो मैं भी दिमागी रूप से थोड़ी डिस्टर्ब हो गयी। मैं ऐसी स्थिति में आ गयी कि अपने ही बच्चों को नहीं पहचान पा रही थी। कुछ रिश्तेदारों ने तब पति को उकसाया था कि पत्नी मेन्टल हो गयी है उसे छोड़ दो, दूसरी शादी कर लो लेकिन मेरे पति ने उनकी बात नहीं मानी और मेरा साथ नहीं छोड़ा। एक दिन मैं भटकते हुए पटनासिटी के गुरुद्वारा पहुँच गयी। वहाँ दो–तीन महीने रही। उस दौरान मेरे नहीं रहने से मेरा दुकान सब ठप्प हो गया। इस दरम्यान गुरूद्वारे में ही एक दिन जब मैंने माथा टेका तो मुझे कुछ–कुछ याद आने लगा। मेरे पति का नंबर भी याद आ गया। मैंने उन्हें कॉल किया तो वे आये और मुझे घर ले गए। घर–परिवार वालों को लगा था कि मेरे साथ कहीं कुछ हादसा हो गया है। फिर इलाज के बाद धीरे–धीरे मैं ठीक होने लगी और जब पूरी तरह से स्वस्थ हो गयी तो अपना बिजनेस सँभालने लगी। 2006 में यूनिसेफ से जुड़ी तो वे आकर मेरे ऊपर पूरी फिल्म बनायें फिर मुझे दिल्ली भी सम्मानित करने ले गएँ।

मैं रोजगार करनेवाली जरूरतमंद महिलाओं को लोन दिलवाने में हर तरह से मदद करती हूँ। 100 से ज्यादा महिलाओं को लोन दिलवा चुकी हूँ जिनमे लगभग 50 महिलाएं खुद का रोजगार करती हैं। कोई सब्जी, कोई मछली तो कोई कपड़े बेच रही हैं। आगे की प्लानिंग है कि मैं एक सिलाई सेंटर खोलूं जिसमे लड़कियां आकर प्रशिक्षण लें और आत्मनिर्भर बनें।

❐

क्यों मार खाते हैं बच्चे ?

✍ राकेश सिंह 'सोनू'

चाचा नेहरू की 135 वीं जन्मतिथि यानी बालदिवस के मौके पर हम बच्चों की समस्याओं पर जिक्र करेंगे। क्या आप बता सकते हैं कि बच्चे मार क्यों खाते हैं ? शायद इसलिए कि बच्चे जिद्दी होते हैं, झूठ बोलते हैं और चोरी करते हैं। लेकिन किसी ने यह भी सोचा है कि उनकी जिद के क्या कारण हैं, वह झूठ क्यों बोलते हैं, चोरी क्यों करते हैं ? नहीं, क्योंकि अभिभावक अभी तक यही समझते रहे हैं कि दंड के अभाव में बच्चे उद्दंड हो जाते हैं। शिक्षक भी बच्चों को दंड देना उनकी शिक्षा का एक अनिवार्य ढंग समझते रहे हैं, परंतु अब यह धारणा गलत सिद्ध हो चुकी है। देखने में आया है कि जो बच्चे मार से नहीं सुधरते वह प्यार से बड़ी आसानी से सुधर जाते हैं।

किशोरावास्था बच्चों के जीवन का सबसे कठिन काल है, इस दौरान बच्चे बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर बढ़ते हैं। इसी अवस्था में सबसे अधिक अपराध होते हैं। स्टैनले हॉल नामक विद्वान का कथन है कि किशोरावस्था बड़े बल तथा तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है। इस अवस्था में बच्चों में क्रांतिकारी परिवर्तन आ जाते हैं। इस अवस्था में बालक का झुकाव जिस ओर हो गया, उस दिशा में वह आगे बढ़ जाता है। इस अवस्था में किशोर तथा किशोरियों की अपराध प्रवृति अपने चरम सीमा पर पहुंच जाती है। बालक नशीली वस्तुओं का सेवन आरंभ कर देते हैं। इस अवस्था में किशोर का शारीरिक विकास तेजी से होता है जिससे उसमें क्रोध, घृणा, चिड़चिड़ापन आदि उत्पन्न हो जाते हैं। इस अवस्था में बालक उद्दंड हो जाता है। वह स्वतंत्रता चाहता है।

सात–आठ वर्ष का एक बच्चा था जो पेंटिंग काफी अच्छी करता था और पढ़ाई से ज्यादा मन उसका पेंटिंग बनाने में लगता था। उसके माता–पिता दोनों ही पेशे से डॉक्टर हैं और वह चाहते थे कि उनका बेटा भी डॉक्टर ही बने इसलिए उसे लगातार पेंटिंग बनाने से मना करते थे जिससे बच्चे का मानसिक संतुलन बिगड़ गया और वह उदास सा रहने लगा, जिस कारण उसके माता–पिता को उसे मनोचिकित्सक से दिखाना पड़ा। वह बच्चा काउंसलिंग के जरिए ठीक हुआ। मनोचिकित्सक ने माता–पिता को हिदायत दी कि वह बच्चे को पेंटिंग के लिए मना ना करें और जब वह थोड़ा बड़ा हो जाए तभी से उसकी रुचि के मुताबिक करियर बनाने को कहें।

बच्चों को प्यार तो करना चाहिए मगर इतना ज्यादा नहीं कि फिर बाद में अफसोस हो। ऐसा एक परिवार है। उनका एक ही बच्चा है और इकलौता होने कारण मां–बाप ने उसकी हर बात मानी। उसकी हर जायज नाजायज जिद पूरी की। जरूरत से ज्यादा उसको प्यार दुलार दिया और नतीजा वह बच्चा उद्दंड हो गया। बड़ा होने पर वह अपने मां–बाप की बिल्कुल नहीं सुनता और उसके पिता कभी उसकी बात ना मानें तो वह उन्हें मारता भी है। मां–बाप इस डर से कि एकलौता है कहीं भाग गया तो क्या होगा, उसकी मार भी सह लेते हैं।

आजकल परिवार में एक ही बच्चा हों तो अच्छा है का चलन चल रहा है।

लेकिन जहां एक ओर यह सिद्धांत अच्छा है तो बुरा भी है। क्योंकि पहली बात तो यह कि इस तरह बच्चा अकेला पड़ जाता है। उसके अलावा आए दिन बच्चों से यह शिकायत रहती है कि वह दूध नहीं पीता, खाना नहीं खाता, पढ़ता नहीं है इत्यादि। जिनकी एक या दो संतान हो और पति–पत्नी दोनों काम पर जाते हों अक्सर उनके बच्चे बिगड़ जाते हैं क्योंकि उन्हें कोई ध्यान देने वाला नहीं होता। छोटे परिवार के बच्चे जब उद्दंड हो जाएं तो सारा दोष उनके माता–पिता का रहता है मगर यही बात जब संयुक्त परिवार के साथ लागू हो तब उसका दोष सिर्फ मां–बाप पर नहीं मढ़ा जा सकता। क्योंकि परिवार बच्चों की प्रथम पाठशाला है। इसलिए संयुक्त परिवार का बच्चा जब बिगड़ जाता है तो स्वाभाविक है उसके मां–बाप को ही लोग दोष देंगे। मगर सारा दोष मां–बाप पर ही मढ़ देना अनुचित है, क्योंकि संयुक्त परिवार में मां–बाप अपने बच्चों के लिए निश्चिंत रहते हैं। उनके नहीं होने या बराबर देखरेख नहीं करने पर भी बच्चा घर के बाकी सदस्यों के साथ खुद को सुरक्षित महसूस करता है। अपने मां–बाप के अलावा घर के बाकी सदस्यों के चाल ढाल, व्यवहार और चरित्र का प्रभाव भी उस बच्चे पर पड़ता है। और बच्चा जब उद्दंड हो जाए तो इसमें मां–बाप के अलावा उसके अन्य अभिभावकों की भी गलती रहती है। यह भी सच है कि जिस घर में बराबर लड़ाई झगड़ा होता हो उस घर का बच्चा भी क्रोधी झगड़ालू और जिद्दी स्वभाव का हो जाता है क्योंकि फसल का अच्छा होना मिट्टी की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। अखबार में एक खबर छपी थी कि एक बच्ची के माता–पिता के बीच मनमुटाव था और वह अलग–अलग रहते थे। बच्ची अपनी मां के साथ नाना के यहां रहती थी। एक

टीवी सीरियल से प्रेरणा लेकर अपने मां–बाप को मिलाने के लिए वह घर से भाग गई। उसके जाने के गम में उसके माता–पिता एक हो गए। ऐसा देखा गया है कि जिस घर में माता–पिता अक्सर लड़ते झगड़ते हैं, उस घर के बच्चे अपनी पढ़ाई में मन लगाने की बजाए हमेशा उनके मतभेद दूर करने की सोचते रहते हैं।

14 –15 वर्ष का एक बच्चा था जिसकी हर गलतियों पर उसकी मां पर्दा डाला करती थी। वह क्या गलत करता है इसकी जानकारी उसके पिता तक को भी नहीं देती थी। सो धीरे–धीरे वह हाथ से छूटता चला गया। अब उसके पिता इस दुनिया में नहीं है और अभी वह मात्र 18–19 वर्ष का है लेकिन अपने कारनामों से समाज में वह चर्चित हो गया है। नीत दिन लड़ाई झगड़ा करता है, रोज रात को देर से घर आता है और मां की सुध भी नहीं लेता।

कुछ बच्चे घर की आर्थिक स्थिति खराब रहने और अभाव की वजह से भी बिगड़ जाते हैं। जरूरत और शौक की चीजें खरीदने के लिए चोरी करने, गलत रास्ते पर चलने से भी गुरेज नहीं करते। जब अभिभावकों के सामने उनकी पोल खुलती है तो नतीजा मार पिटाई में परिणित होता है। लेकिन उद्दंड हो चुके बच्चों का इलाज मारना पीटना नहीं है, बल्कि उन्हें समझदारी से सही रास्ते पर लाना होता है।

बच्चों की कुछ ऐसे ही समस्याएं हैं जो खुद उसके अभिभावकों की नादानियां एवं गैर जिम्मेदारियां का नतीजा है। अगर आज का इंसान सिर्फ अपने स्वार्थ को अलग रखकर देखे तो खुद ब खुद कितने बच्चों की समस्या दूर हो जाएंगी लेकिन ऐसा नहीं होता। यहां के लोग जब यह मान्यता कि ''बच्चे ही तो हैं मार खाएंगे तो अपने आप शांत हो जाएंगे'' को भुला देंगे तो यह गुलाब से बच्चे लंबे समय तक खिला करेंगे।

❐

मिसाल बना एक फौजी का पर्यावरण प्रेम

✍ संजय कुमार पांडेय
पूर्व आर्मी जवान

वह आपको पटना शहर के पार्कों–मैदानों में साइकल से चलता हुआ दिख जायेगा। नाम से बड़ा उसका काम बोलता है। आप शहर में गंदगी फैलाते हो, वातावरण को प्रदूषित करते हो और वह बिना किसी झिझक और लालसा के शहर को साफ कर उसे हरा–भरा करने में अपनी सारी ऊर्जा लगा देता है। जी हाँ, हम बात कर रहे हैं पटना के पर्यावरण प्रहरी की। सिवान जिले से ताल्लुक रखनेवाले पूर्व आर्मी जवान संजय कुमार पांडेय फिलहाल पटना, गांधीमैदान स्थित स्टेट बैंक में सेक्यूरिटी गार्ड हैं लेकिन उनके पर्यावरण के प्रति लगाव व समर्पण को देखकर शहर के लोगों ने उन्हें नया नाम दिया है 'पर्यावरण का प्रहरी'। इनके दादा जी पटना में गोलघर चौराहे के पास एक मंदिर में रहते थें। बचपन से ही उन्हीं के साथ रहते हुए संजय की शिक्षा–दीक्षा पटना में ही हुई। बचपन में जब गोलघर से पैदल बी.एन.कॉलेजिएट पढ़ने जाते थें तो रास्ते में हरी–भरी नर्सरी की खूबसूरती देखकर पर्यावरण के प्रति खुद–ब–खुद जागरूक हुए।

इनकी बचपन से ही पर्यावरण के प्रति रूचि रही। जब स्कूल में 6 ठी कक्षा में पढ़ते थें तो चाट–समोसे खाने के लिए जो पैसे स्कूल ले जाते थें उसमे से ही थोड़ा पैसा बचाकर नर्सरी से पौधा लाकर गाँधी मैदान या किसी ना किसी पार्क में लगा दिया करते थें। जैसे जैसे ये कारवां चलता रहा और शौक बढ़ता गया। बहुत कम उम्र में नौकरी लग गयी। आर्मी में चले गए। अपनी ड्यूटी के दौरान जहाँ भी पोस्टेड रहे समय निकालकर वहां भी कहीं ना कहीं पौधे लगा दिया करते थें। कोई अधूरा या वीरान पड़ा पार्क डेवलप कर दिया करते थें। जब छुट्टी में घर आते तो इन्हें यह देखकर हैरानी होती कि सफाई के मामले में उनका राज्य इतना पिछड़ा क्यों है..! तब छुट्टी में कहीं ना कहीं कोई जगह डेवलप कर दिया करते थें। जैसे स्टेशन के पास जो रेल इंजन का मॉडल स्थापित है वहां बहुत ज्यादा गंदगी थी जिसे इन्होने साफ करके बाहर से मिट्टी व प्लांट लाकर के लगा दिया। डी.एम. आवास के पास चिल्ड्रन पार्क है जो वीरान पड़ा था। उसे भी डेवलप करने का प्रयास किये। गाँधी मैदान में तो यदा–कदा करते ही रहते थें। सेना में ड्यूटी के दौरान छुट्टी में अपने रिलेटिव या दोस्तों के घर गांव जाते तो वहां भी किसी ना किसी स्कूल में पौधा लगा दिया करते थें. अपने दोस्तों को,

जाननेवालों को भी मोटिवेट करके पौधा लगवाते थें. बच्चों को समझाते थें कि "बिहार में स्वछता की कमी है, आप देश के भविष्य हैं तो हम चाहते हैं कि आपकी सोच हमसे भी ज्यादा बेहतर बने. कोई भी जगह सफाई या हरियाली हो यह जरुरी नहीं कि वह सरकार के बदौलत ही हो. कोई व्यक्ति अगर सक्षम है तो ऐसा कर सकता है।"

पुणे में जब संजय सेना की तरफ से लायब्रेरी कोर्स कर रहे थें वहां पर दो पार्क थें जो वीरान पड़े हुए थें. इन्होने अपने खाली समय में उस दोनों पार्क को डेवलप किया और एक का नाम दिया स्व. कल्पना चावला पार्क और एक का नाम दिया शहीद भगत सिंह पार्क। वहां पौधा लगाकर उसे सैल्यूट किया। संजय जी का कोई संगठन नहीं है लेकिन एक मुहीम जरूर चलता है। जिसका नाम है 'ऑपरेशन जय उद्धान'। क्यूंकि ये सेना के जवान रहे हैं तो वहां कोई भी मिशन होता उसका नाम कोई ना कोई ऑपरेशन होता था। 'ऑपरेशन जय उद्धान' के तहत पहले संजय खुद पौधा लगाते थें लेकिन आजकल पौधा लगवाने का काम करते हैं। अब बड़े–बड़े नेताओं, मंत्रियों, अफसरों से ये पौधे लगवाते हैं ताकि ज्यादा से ज्यादा समाज जागरूक हो सके। कभी–कभी गाँधी मैदान में सफाई करके, गड्ढ़ा करके पौधा वहीँ रख देते हैं और मॉर्निंग वॉक करनेवालों से बोलते हैं कि "आइये एक पौधा लगाकर आगे बढिये।" यह उन लोगों के लिए भी सम्मान की बात होती है। इनका हम दो हमारे दो के तर्ज पर छोटा सा परिवार है। एक बेटा और एक बेटी है. संजय अपने बेटे का पहला जन्मदिन पटना के कारगिल चौक पर

पौधारोपण करके मनाये थें। जो पैसे वे जन्मदिन की पार्टी में खर्च करते उसी से गमला–पौधा खरीदकर शहीदों को नमन करते हुए लगाए थें। तब से बच्चों के हर जन्मदिन पर उनके हाथ से ही एक पौधा लगवाते हैं. 2017 में बिहार सरकार के 7 निश्चय के तहत मुख्यमंत्री आवास के नजदीक गोलंबर के पास 7 कलर का ओढ़उल का पौधा लगाए थें। पिछले साल 2017 में नमामी गंगे के अभियान में बिहार सरकार ने इन्हें पटना से मेंबर बनाया है इसलिए कि ये घाट वगैरह पर साफ–सफाई में बहुत रूचि लेते हैं।

एक बार इन्होने एक न्यूज में पढ़ा था कि एक मुस्लिम कंट्री में कोई ऐसी जगह है जहाँ कुछ लोग मिलकर चौराहे के दीवार पर लिख दिए 'नेकी की दीवार' और खूंटी टांग दिए। तख्ती लगायी जिसपर लिखा था जिसके पास एक्स्ट्रा कपड़ा है तो यहाँ टांग कर चला जाये ताकि जिसके पास नहीं है वो यहाँ से ले जा सके। और उनको देखकर अपने देश के ही एक व्यक्ति ने सबसे पहले जयपुर में यह 'नेकी की दीवार' शुरू की थी। संजय ने भी यह न्यूज देखा तो बहुत प्रभावित हुए. फिर गोलघर, बुद्घाट के पास एक गंदे जगह को साफ करके 2 अक्टूबर 2016 को गाँधी जयंती के अवसर पर इन्होने 'नेकी की दीवार' शुरू कर दी। जहाँ से कोई जरूरतमंद व्यक्ति खुशी से अपने उपयोग के सामान यथा कपड़े, खाने की चीजें, जूता–चप्पल आदि ले जा सकता है। मतलब जिसके घर में ऐसा सामान है जिसका इस्तेमाल अब वह नहीं कर रहे तो उसे यहां 'नेकी की दीवार' के पास पहुंचा दें।

इनके सराहनीय कार्य को देखते हुए बिहार माड़वाड़ी युवा संघ, माँ वैष्णो देवी सेवा समिति, यूथ फॉर स्वराज और लायंस क्लब आदि संस्थाओं ने इन्हें सम्मानित किया है। इन्होने पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने और समाज को विकसित करने के उद्देश्य से 'ऑपरेशन स्मार्ट थॉट' के नाम से एक वाट्सएप ग्रुप भी बनाया है जिस प्लेटफॉर्म पर कोई भी युवा आकर समाज की बेहतरी के लिए अपने सुझाव रख सकता है। पर्यावरण और समाज के प्रति यह समर्पण देखकर इस युवा पर्यावरण के प्रहरी के जज्बे को 'बोलो जिन्दगी' सैल्यूट करती है।❐

लघुकथा

वो नाश्ता

✍ मृत्युंजय कुमार मनोज
निराला एस्टेट, टेकजोन –4,
ग्रेटर नोएडा (पश्चिम), उत्तर प्रदेश

'फिर से सूखी रोटी और आलू की सब्जी। पिछले तीन महीने से यही खाना खा–खाकर ऊब चुका हूं। मैं नहीं खाऊंगा' –खाने की थाली को गुस्से में उलटते हुए पप्पू ने कहा।

'अरे बेटा! खाने का अपमान नहीं करते हैं। सुबह में अपने घर से खाना खाकर ही बाहर निकलना चाहिए। कल तुम्हारे पसंद का खाना बना दूंगी। अभी जो बना है, खा लो'–श्यामा, पप्पू की मां, ने दुःखी मन से समझाते हुए कहा।

दिल्ली के बुराड़ी इलाका का 'श्यामा निवास'। जनवरी महीने की कंपकंपाती ठंड। रविवार का दिन। सुबह आठ बजे हैं। लेकिन 'श्यामा निवास' का माहौल गर्म है। पप्पू नौवीं क्लास में पढ़ता है और चार भाई–बहनों में वह सबसे छोटा है। उसे तनिक भी भूख बर्दाश्त नहीं। भूख के मारे उसका क्रोध सातवें आसमान पर है।

जीवन दास, पप्पू के पिता, दिल्ली में बैटरी बनाने की प्राइवेट कंपनी में सुपरवाइजर के पद पर काम करते थे। घर के एकमात्र कमाऊ मेंबर हैं। किसी तरह गुजारा हो जा रहा था। किंतु कंपनी घाटे में चलने के कारण बंद हो गई। अब जीवन जी पिछले एक वर्ष से एक रेजिडेंशियल सोसायटी में गार्ड की नौकरी करते हैं। तब से घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है।

'मां, मैं चाचा जी के यहां जा रहा हूं। वहीं नाश्ता कर लूंगा' –पप्पू ने क्रोधित मुद्रा में साईकिल निकालते हुए कहा। दो किलोमीटर की दूरी पर

रामनिवास दास जी का घर है। रिश्तेदारी में उसके चाचा लगते हैं। वे दिल्ली सरकार में बिजली विभाग में इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। वे पप्पू को बेटे जैसा मानते हैं। पप्पू को भी उनसे बड़ा लगाव है।

'बेटा, मेरी मानो तो उनके यहां मत जाओ। हमारी माली हालत किसी से छिपी नहीं है। गरीबों का कोई रिश्तेदार नहीं होता है। उसे कोई नहीं पहचानता है' –श्यामा जी ने समझाते हुए कहा। लेकिन पप्पू नहीं माना।

कुछ देर बाद।

'प्रणाम चाचा जी। प्रणाम चाची जी' –पप्पू ने आदर सहित कहा।

'आओ बेटा। बहुत दिनों के बाद आए। हमेशा सोचता हूं तुम्हारे घर जाऊं। पर समय ही नहीं मिलता है। पापा–मम्मी का क्या हाल–चाल है? तुम्हारी पढ़ाई–लिखाई कैसी चल रही है? सुबह–सुबह आए हो। नाश्ता–पानी करके जाना' –रामनिवास जी ने कहा।

नाश्ते का नाम सुनते ही पप्पू के मन में पूड़ी–सब्जी की थाली घूमने लगी। अक्सर चाचा जी के यहां उसे यही खाने को मिलता था।

'संडे का दिन है न। सुबह लेट से उठना होता है। सारे काम में लेट हो ही जाता है। अभी तक हमारे यहां नाश्ते में कुछ नहीं पका है। आराम से होगा। लेकिन चलो, तुम्हें कुछ स्पेशल खिलाती हूं। रात की बची रोटी है। नमक, सरसों के तेल और प्याज के साथ खाने में तुमको खूब मजा आएगा। हमलोगों ने कई बार खाया है' –वीणा, उसकी चाची ने थाली परोसते हुए कहा।

'गरीबों के रिश्तेदार.. नहीं..' मां की बातें पप्पू के जेहन में घूमने लगी। कच्ची उम्र में वह सांसारिक जीवन के एक कटु अनुभव से रु–ब–रु हो रहा था। वह आश्चर्यचकित मुद्रा में नाश्ते की थाली और अपने पिता–समान चाचा को देखे जा रहा था। उसे अपने घर की सूखी रोटी और आलू की सब्जी की याद आ गई।

❐

विद्या, विवेक और वाणी के अधिष्ठाता बुध

✍ उमेश उपाध्याय
आध्यात्मिक एवं ज्योतिष विशेषज्ञ
संपर्कः 9709378488

ग्रहो में बुध को युवराज कहा जाता है। बुध से विद्या, बुद्धि, वाणी, बंधु, विवेक, मामा, मित्र और वचन का विचार किया जाता है।

बुध उत्तर दिशा का स्वामी ,नपुंसक, त्रिदोष प्रकृति, श्याम वर्ण और पृथ्वी तत्व है। यह चतुर्थ और दशम भाव का कारक ग्रह है लेकिन चतुर्थ भाव में निष्फल माना जाता है। इससे जिह्वा और तालू आदि उच्चारण के अवयवों का विचार किया जाता है। यह पाप ग्रहों के साथ रहने से अशुभ और शुभ ग्रहों के साथ रहने पर शुभ फलदायक होता है। यह चिकित्सा शास्त्र, शिल्प ,कानून ,ज्योतिष विद्या, वाणिज्य का कारक ग्रह है। इससे गला रोग, संग्रहणी,बुद्धि भ्रम, आलसी और श्वेत कुष्ठ आदि का विचार किया जाता है।

सूर्य और शुक्र उनके मित्र हैं। चंद्र इनका शत्रु है। बुधवार इनका अपना शुभ वार है। अकेला बुध 2, 3, 6, 8, 10, 11 भाव में होने पर शुभ एवं लाभकारी होता है। व्यक्ति को बुद्धिमान और विद्वान बनाता है। उच्च पदासीन करता है।

बुध ग्रह से बनने वाले प्रमुख योगः—

(1) बुधादित्य योगः—

बुध और सूर्य की युति से यह योग बनता है। इस योग वाला व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करता है। वह बुद्धिमान और विद्वान होता है।

(2) भद्र महापुरुष योगः—

जन्म लग्न या चंद्र लग्न से बुध केंद्र में अपनी राशि या उच्च राशि मे होने पर यह योग बनता है। इस योग में व्यक्ति बुद्धिमान, गुणवान, धनवान और यशस्वी होता है।

द्वादश भाव में रहने वाले बुध ग्रह का फल निम्न हैः—

प्रथम भाव में बुध के होने से जातक गणितज्ञ ,उदार, विद्वान,स्त्री प्रिय, मृदु भाषी, मितव्ययी, आस्तिक और दीर्घायु होता है।

द्वितीय भाव में होने से अच्छे वक्ता, सुंदर ,सुखी ,वकील का पेशा करने वाला ,मितव्ययी ,अच्छे कार्य करने वाला एवं साहसी होता है।

तृतीय भाव में होने से परिश्रमी, कार्य दक्ष,लेखक ,संपादक,कवि ,बिलासी ,चंचल , धर्मात्मा ,मित्र प्रेमी होता है।

चतुर्थ भाव में रहने पर व्यक्ति पंडित, विद्वान ,भाग्यवान , वाहन सुखी ,दानी, आलसी, गीत प्रिय, उदार, बंधु प्रेमी,लेखक एवं नीतिवान होता है।

पंचम भाव में बुध व्यक्ति को सदाचारी, प्रसन्न ,प्रतिष्ठित और कुशाग्र बुद्धि वाला बनाता है।

छठे भाव में बुध हो तो विवेकी, वादी , कलह प्रिय, स्त्रीप्रिय, आलसी, रोगी और अभिमानी बनाता है।

सातवें भाव में बुध व्यक्ति को चतुर, मिलनसार, व्यवहार कुशल, स्त्री भक्ति एवं कूटनीतिज्ञ बनाता है।

अष्टम भाव का बुध व्यक्ति को धनवान ,प्रतिष्ठित , राज्य मान्य बनाता है, वह अभिमानी होता है और मानसिक रूप से दुखी रहता है।

नवम भाव में बुध हो तो सदाचारी, गवैया, कवि, संपादक ,लेखक, ज्योतिषी ,विद्वान ,व्यवसाय प्रिय एवं भाग्यवान होता है।

दसवें भाव का बुध हो तो सत्यवादी, विद्वान, लोकमान्य ,मनस्वी ,कानून का ज्ञाता वकील या न्यायाधीश हो सकता है। दशम भाव का बुध लेखा संबंधी कार्य भी कराते हैं ।

एकादश भाव का बुध व्यक्ति को सुंदर ,साहसी ,बुद्धिमान, सदाचारी, धनवान, प्रसिद्ध ,विद्वान एवं विचारवान बनाता है। बड़े भाई का सहयोग भी प्राप्त होता है।

द्वादश भाव का बुध व्यक्ति को शास्त्र ज्ञाता, विद्वान ,लेखक ,वेदांती, सुंदर एवं धर्मात्मा बनाता है।

राशि के अनुसार बुध का फलः—

मेष राशि गत बुध के होने से जातक दुष्ट, चंचल, दुबला पतला, चतुर और नास्तिक बनाता है।

वृष राशि गत बुद्ध व्यक्ति को मृदु भाषी, धनी ,विलास प्रिय, विद्वान, दानी ,गुणी, गुरु भक्त बनाता है।

मिथुन राशि का रहने से जातक सुखी, प्रियभाषी सदाचारी एवं अच्छा लेखक बनाता है। प्रतिष्ठा भी दिलाता है ।

कर्क राशि का बुध व्यक्ति को वाचाल कामुक और प्रदेशवासी बनाता है। ऐसा जातक जलज वस्तु से धन कमाने वाला होता है।

सिंह राशिगत बुध व्यक्ति को मितभाषी, क्रोधी किंतु उदार, ईमानदार ,न्याय प्रिय और पथ प्रदर्शक भी बनाता है।

कन्या राशि गत बुध के रहने से जातक मधुर भाषी, चतुर ,लिखने में प्रवीण, कवि ,लेखक ,संपादक भी बनाता है और सुखी करता है।

बुध के तुला राशि गत रहने से जातक विद्वान, वक्ता ,उपदेशक, स्त्री पुत्र से सुखी दानशील एवं बहुत खर्चीला स्वभाव का होता है।

वृश्चिक राशि का बुध होने से जातक आलसी, नास्तिक, परिश्रमी और गृह भूमि वाला होता है।

धनु राशि गत बुध के होने से जातक कुल का पालन करने वाला, राजमान्य, ईमानदार, गुणवान, विद्वान, धनी और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

मकर राशि गत बुध के होने से जातक शिल्पी, शत्रु से पीड़ित और आज्ञाकारी होता है। वह सदैव कर्ज में होता है।

कुंभ राशिगत बुध के होने से जातक धन और धर्म से रहित ,शत्रुओं से दुखित, शिल्पी एवं कलही होता है।

मीन राशि बुध की नीच राशि है। ऐसे जातक सेवक, पराए धन की रक्षा करने वाला, देवताओं में प्रेम रखने वाला और उत्तम स्त्री वाला होता है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त अन्य ग्रहों के दृष्टि का भी प्रभाव पड़ता है।

बुध के अशुभ होने पर उपचार एवं टोटकेः—

(1)गणेश जी की आराधना करें और उन्हें दूर्वा अर्पित करें,

(2)गाय को हरा चारा खिलाएं,

(3)विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें,

(4) बुधवार को उपवास रखें।

❐

न्याय की देवी में हुआ सार्थक बदलाव-सर्वोच्च न्यायालय के लाइब्रेरी में रखी गई प्रतिमा

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

न्याय की देवी जिसके आँख पर बंधी है पट्टी, बाँए हाथ में तराजू और दायें हाथ में तलवार। न्याय की देवी का आंख बंद रहने पर लोग कहते हैं कि कानून अंधा है। लेकिन सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के आदेश से न्याय की देवी में हुआ सार्थक बदलाव, क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय के लाइब्रेरी में जो प्रतिमा रखी गई है, उस प्रतिमा के आंख से पट्टी हटा दिया गया है यानि प्रतिमा की आँख खुली हुई है , प्रतिमा के बाएं हाथ से तराजू को हटाकर उसे दाएं हाथ में कर दिया गया है और बाएं हाथ में संविधान दे दिया गया है। लाइब्रेरी में लगाई गई न्याय की देवी की इस प्रतिमा से यह संदेश निश्चित रूप में जायेगा कि कानून अंधा नहीं है और न दंड का प्रतीक है।

न्याय की देवी के सार्थक बदलाव के संदर्भ में मुख्य न्यायाधीश का मानना है कि कानून कभी अंधा नहीं होता है और यह सभी को समान रूप से देखता है। लेकिन भारत को ब्रिटिश विरासत से बाहर निकलकर आगे बढ़ना चाहिए। न्याय की देवी का स्वरूप बदला जाना चाहिए। प्रतिमा के एक हाथ में संविधान होना चाहिए, न कि तलवार, संविधान रहने से यह संदेश जाएगा कि अदालत संविधान के अनुसार न्याय करती है। तलवार हिंसा का प्रतीक है, जबकि अदालतें संवैधानिक कानूनों के अनुसार न्याय करती हैं।

जानकारी के अनुसार, जिस न्याय की देवी को हमलोग अदालतों में देखते हैं वह प्रतिमा 17वीं शताब्दी में लाई गई यूनान की देवी की प्रतिमा है,

जिसका नाम जस्टिया है और उन्हीं के नाम से 'जस्टिस' शब्द आया है। उनकी आंखों पर बंधी पट्टी दिखाती है कि न्याय हमेशा निष्पक्ष होना चाहिए। 17वीं शताब्दी में एक अंग्रेज अफसर पहली बार इस मूर्ति को भारत लाए थे। यह अफसर एक न्यायालय अधिकारी थे। 18वीं शताब्दी में ब्रिटिश राज के दौरान न्याय की देवी की मूर्ति का सार्वजनिक रूप से इस्तेमाल होने लगा। जबकि लेडी जस्टिस को विश्व भर में न्याय और कानून का प्रतीक माना जाता है। उनकी प्रतिमा का सामान्य स्वरूप आंखों पर बंधी पट्टी, एक हाथ में तराजू और दूसरे हाथ में तलवार है। इस प्रतीक को न्याय की निष्पक्षता, संतुलित न्याय, शक्ति और अनुशासन का प्रतिनिधित्व माना जाता है।

न्याय की देवी में हुआ बदलाव का अर्थ है कि भारत में न्याय–व्यवस्था केवल नियमों और कानूनों पर आधारित नहीं है, बल्कि यहां आधुनिक समाज की जटिलताओं, संवेदनशीलता और विभिन्न मुद्दों को ध्यान में रखते हुए भी न्याय का प्रयास किया जाता है। यह बदलाव नई प्रतिमा, न्यायपालिका के आधुनिक दृष्टिकोण और इसके सतत विकास, समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस बदलाव से एक नए भारत की ओर बढ़ता कदम दिखता है। इस न्याय की देवी से न्याय–व्यवस्था निष्पक्ष और अधिक सुदृढ़ होगी। जहाँ तक मैं समझता हूँ कि न्याय की देवी की प्रतिमा में हुए महत्वपूर्ण बदलाव प्रतिमा के स्वरूप और उसके प्रतीकों में किए गए हैं। इस बदलाव से अब देवी की आंखों पर पट्टी नहीं है, जिसका सामान्य अर्थ होता है कि न्याय अंधा नहीं है, बल्कि यह विवेकशीलता के साथ समाज की समस्याओं को देखता और समझता है। नई प्रतिमा में तलवार की जगह भारतीय संविधान की प्रति है, जिससे यह संदेश मिलता है कि न्याय की नींव संविधान व उसकी लोकतांत्रिक मान्यताओं पर आधारित है। भारतीय परिधान साड़ी में न्याय की देवी का नया स्वरूप संविधान और संस्कृति के प्रति सम्मान का प्रतीक प्रतीत होता है, जो न्याय के साथ–साथ भारतीय मूल्यों को भी सशक्त करता है।

❐

इंपा ने किया मुंबई आए बिहार राज्य फिल्म विकास एवं वित्त निगम के अधिकारियों का स्वागत

मुंबई ब्यूरो, इंडियन मोशन पिक्चर प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन (इंपा) ने बिहार राज्य फिल्म विकास एवं वित्त निगम (बीएसएफडीएफसी) के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक सार्थक बैठक की, जो बिहार के फिल्म उद्योग में विकास और सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस बैठक में श्री दयानिधान पांडे, आईएएस, कला, संस्कृति और युवा विभाग के सचिव तथा बीएसएफडीएफसी के प्रबंध निदेशक, राहुल कुमार , आईएएस, तथा संग्रहालय निदेशक और बीएसएफडीएफसी के महाप्रबंधक आदि शामिल थे। इन अधिकारियों ने इंपा कार्यालय का दौरा किया। बैठक में अनिल शर्मा , सुश्री पूनम ढिल्लों , कमल मुकुट. मुकेश ऋषि , टीनू देसाई तथा धनपत कोठारी जैसे प्रमुख निमार्ता तथा फिल्म उद्योग की प्रमुख हस्तियां शामिल थीं। इंपा का प्रतिनिधित्व करने वाले कार्यकारी समिति के सदस्यों में अध्यक्ष अभय सिन्हा , सुश्री सुषमा शिरोमणि , सुरेंद्र वर्मा , अतुल पटेल , बाबूभाई थिबा, कुकू कोहली , महेंद्र धारीवाल, निशांत उज्जवल , अशोक पंडित , राजकुमार आर पांडे , हरसुखभाई धडुक , मनीष जैन , रोशन सिंह , यूसुफ शेख , संजीव सिंह, विनोद गुप्ता आदि भी बैठक में शामिल थे। बैठक के दौरान, बीएसएफडीएफसी के अधिकारियों ने बिहार फिल्म प्रमोशन नीति पर अपडेट प्रदान किया, जिसकी आधिकारिक घोषणा जुलाई 2024 में की गई थी और अक्टूबर में इसे लागू किया गया था। इस क्षेत्र में तेजी से काम करने की बिहार सरकार की मंशा को देखते हुए यह प्रक्रिया तेज की गई है। यह नीति फिल्म निमार्ताओं को आकर्षक लाभ प्रदान करती है, साथ ही सिनेमा हॉल को भी इसी तरह का समर्थन देने की योजना चल रही है, जिससे बिहार के मनोरंजन के बुनियादी ढांचे को और मजबूत करने में मदद मिलेगी। दयानिधान पांडे और राहुल कुमार ने फिल्म–अनुकूल वातावरण स्थापित करने में बिहार की तीव्र प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने राज्य को फिल्म निर्माण और सिनेमा प्रदर्शन के लिए और भी अधिक आकर्षक गंतव्य बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि नीति इंपा और अन्य उद्योग हितधारकों से प्राप्त फीडबैक पर आधारित है, और वे सफल कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए किसी भी आवश्यक समायोजन के लिए तैयार हैं। इंपा के अध्यक्ष अभय सिन्हा ने बिहार से आए अधिकारियों को इंपा के पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया, तथा अपने सदस्यों के बीच बिहार को फिल्मांकन स्थल के रूप में सक्रिय रूप से बढ़ावा देने तथा उन्हें प्रस्तावित प्रोत्साहनों का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। इंडियन फिल्म एंड टेलीविजन डायरेक्टर्स एसोसिएशन आईएफटीडीए) के अध्यक्ष अशोक पंडित ने भी बीएसएफडीएफसी प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया तथा घोषणा की कि आईएफटीडीए बिहार की फिल्म प्रोत्साहन नीति के सफल क्रियान्वयन में आईएमपीपीए के साथ एकजुट है। यह बैठक सकारात्मक रूप से संपन्न हुई, जिसमें दोनों पक्षों ने एक–दूसरे के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता व्यक्त की और इंपा ने पूर्ण आश्वासन दिया कि बिहार सरकार द्वारा दिए जा रहे समर्थन और सहयोग से हम यह सुनिश्चित करेंगे कि बिहार सभी भाषाओं में फिल्म बनाने वाले सभी निमार्ताओं के लिए पसंदीदा शूटिंग स्थल बने। ❐

मृणाल कुलकर्णी अभिनीत हिंदी फिल्म 'ढ़ाई आखर' का ट्रेलर जारी

भारतीय सिनेमा में साहित्यिक कृतियों को बड़े पर्दे पर ढालने की परंपरा लंबे समय से चली आ रही है। निर्देशक प्रवीण अरोड़ा अब 'ढाई आखर' के साथ हिंदी साहित्य की एक मार्मिक कहानी को जीवंत कर रहे हैं। जे.पी. अग्रवाल द्वारा प्रस्तुत और रिलीज की गई यह फिल्म सामाजिक चुनौतियों के बीच एक महिला की आत्म–खोज की यात्रा का एक मार्मिक चित्रण होने का वादा करती है।

इस फिल्म में प्रसिद्ध हिंदी और मराठी अभिनेत्री मृणाल कुलकर्णी हर्षिता की मुख्य भूमिका में हैं, साथ ही प्रशंसित थिएटर और फिल्म अभिनेता हरीश खन्ना और लोकप्रिय मराठी अभिनेता रोहित कोकाटे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मुंबई में एक कार्यक्रम में फिल्म का ट्रेलर और संगीत लॉन्च किया गया, जिसमें मृणाल कुलकर्णी, निर्माता और प्रस्तुतकर्ता जे.पी. अग्रवाल, निर्देशक प्रवीण अरोड़ा, संगीतकार अनुपम रॉय और प्रशंसित गायिका कविता सेठ मौजूद थीं। ट्रेलर एक स्थायी प्रभाव छोड़ता है, जिसमें घरेलू हिंसा के बीच अपनी पहचान खोजने के लिए संघर्ष कर रही एक महिला की कहानी को दर्शाया गया है। फिल्म के संवाद में एक शक्तिशाली पंक्ति गहराई से गूंजती है– ''जहाँ बंधन है, वहाँ प्रेम नहीं है। जहाँ प्रेम है, वहाँ बंधन नहीं है।'' इस विषय को पूरी फिल्म में खूबसूरती से बुना गया है। दो भावपूर्ण गीत दिखाए गए, जिनमें इरशाद कामिल द्वारा लिखित धूप की ओर अमीर खुसरो द्वारा कालातीत रचना ऐ री सखी शामिल है, जिसे कविता सेठ ने बहुत ही खूबसूरती से प्रस्तुत किया है। निर्देशक प्रवीण अरोड़ा ने साहित्य में अपनी गहरी

रुचि के बारे में बताते हुए अपनी प्रेरणा साझा की। हिंदी साहित्यिक पत्रिका हंस में प्रसिद्ध लेखक अमरीक सिंह दीप की कहानी तीर्थ के बाद पढ़ने के बाद, अरोड़ा ने इसे सिनेमा के लिए रूपांतरित करने के लिए बाध्य महसूस किया। प्रसिद्ध लेखक असगर वजाहत ने इस कहानी से विकसित उपन्यास पर आधारित पटकथा और संवाद लिखे हैं। 1980 के दशक में सेट की गई यह फिल्म महिलाओं की सामाजिक स्थिति को उजागर करती है। शिक्षा और जागरूकता में प्रगति के बावजूद, महिलाओं के प्रति कुछ दृष्टिकोण अपरिवर्तित हैं। फिल्म मानसिक हिंसा का एक सूक्ष्म दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो, जैसा कि अरोड़ा ने जोर दिया, शारीरिक हिंसा से अधिक हानिकारक हो सकती है। ढाई आखर इस भावनात्मक यात्रा को दर्शाती है, और उन्हें उम्मीद है कि दर्शक बड़े पर्दे पर इस सिनेमाई और साहित्यिक जादू का अनुभव करेंगे। अरोड़ा ने शूटिंग के दौरान चुनौतीपूर्ण 46 डिग्री सेल्सियस तापमान को याद करते हुए मृणाल कुलकर्णी के समर्पण की भी प्रशंसा की। उन्होंने उनकी प्रतिबद्धता को नोट किया क्योंकि उन्होंने केवल अभिनय करने के बजाय अपने चरित्र को मूर्त रूप दिया। फिल्म को हरिद्वार और ऋषिकेश के पहाड़ी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर शूट किया गया था ताकि नायक की सेटिंग से मेल खा सके जो पहाड़ियों में रहने वाली एक लेखिका है। फिल्म को पूरे भारत में रिलीज करने की तैयारी है। प्रस्तुतकर्ता जे.पी. अग्रवाल ने कहा कि यह फिल्म केवल लाभ के लिए नहीं बनाई गई थी। अपराध और एक्शन फिल्मों के चलन के बीच, ढाई आखर का उद्देश्य परिष्कृत सिनेमा प्रस्तुत करना है। हमें विश्वास है कि यह दर्शकों को पसंद आएगा और रचनात्मक और व्यावसायिक दोनों मोर्चों पर सफल होगा।

संगीत लॉन्च के दौरान, कविता सेठ ने ऐ री सखी का लाइव प्रदर्शन किया, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। गोवा में प्रतिष्ठित पैनोरमा सेक्शन के लिए चुने गए ढाई आखर को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली है।

मृणाल कुलकर्णी ने इस परियोजना का हिस्सा बनने पर अपनी खुशी व्यक्त की, उन्होंने साझा किया कि उनकी साहित्यिक पृष्ठभूमि ने इस भूमिका को विशेष रूप से सार्थक बना दिया। उन्होंने महिलाओं की भावनाओं और अनुभवों को संवेदनशील रूप से तलाशने वाली कहानी को सामने लाने के लिए अरोड़ा के प्रयासों की सराहना की।

कबीर कम्युनिकेशंस, आकृति प्रोडक्शंस और एस.के. जैन जमाई के बैनर तले निर्मित, ढाई आखर 22 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

❐

ह्यूस्टन, अमेरिका के 'शिव, दुर्गा, कृष्ण, काली मंदिर' ट्रस्ट की दुर्गापूजा में सम्मिलित हुई भारतीय वाणिज्य दूत

ह्यूस्टन के भारतीय वाणिज्य दूतावास से एक सम्मानित प्रतिनिधि, वाणिज्यदूत अंजू मलिक ने इस्कॉन मंदिर में 'शिव, दुर्गा, कृष्ण, काली मंदिर' ट्रस्ट (SDKKM) की दुर्गा पूजा 2024 में भाग लिया।

वाणिज्यदूत अंजू मलिक ने दिव्य माँ दुर्गा के दर्शन किए, शुभ महाआरती में भाग लिया। उन्होंने मुख्य पुजारी बिष्णुप्रदा गोस्वामी से आशीर्वाद प्राप्त किया।

वाणिज्यदूत अंजू मलिक ने सम्मानित SDKKM सदस्यों और भक्तों के लिए प्रोत्साहन भरे शब्द कहे और ह्यूस्टन के स्थानीय प्रतिभाओं की सराहना की, जिन्होंने मंच पर विविध सांस्कृतिक गतिविधियाँ प्रस्तुत कीं।

पानी पर तैरता स्वप्न-लोक : लोकतक झील

✍ डॉ. किशोर सिन्हा
वरिष्ठ नाटककार और मीडिया–विशेषज्ञ

मणिपुर प्रकृति के वैभव से परिपूर्ण होने के साथ–साथ संगीत, कला, नाटक और प्रसिद्ध मार्शल आर्ट 'थांग टा' के लिए जाना जाता है। यहाँ 'नागा' तथा 'कूकी' समेत, लगभग 60 जनजातियाँ निवास करती हैं। यहाँ के लोग संगीत तथा कला में बड़े प्रवीण होते हैं। मणिपुर की आधिकारिक भाषा 'मैतेई' है, जिसे 'मणिपुरी' भी कहा जाता है। यह तिब्बती–बर्मी समूह की भाषा है। इसके अलावा यहां लगभग 23 बोलियां बोली जाती हैं। यहां के पहाड़ी ढालों पर चाय तथा घाटियों में धान की उपजें प्रमुख हैं। यहीं से होकर एक सड़क म्यांमार के लिये जाती है।

यहाँ तीन प्रमुख जनजातियां निवास करती हैं। घाटी में 'मैतेई' जनजाति और 'बिष्णुप्रिया मणिपुरी' रहती है, तो 'नागा' और 'कूकी' जनजातियाँ पहाड़ों पर रहती हैं। प्रत्येक जनजाति की ख़ास संस्कृति और रीति–रिवाज हैं, जो इनके नृत्य, संगीत तथा पारंपरिक लोकाचारों में दृष्टिगोचर होता है। भारत के पूर्वी सीमा पर स्थित इस राज्य के एक ओर पूर्व में म्यांमार है, तो उत्तर–पश्चिम दिशा में नागालैंड और दक्षिण में मिजोरम है।

मणिपुर की भौगोलिक स्थिति दर्शनीय है। उत्तरी तथा पूर्वी इलाकों में ऊंची पहाड़ियां हैं और मध्य भाग में मैदानी समतल है। यहां हर पहाड़ के बीच में किसी–न–किसी नदी का अस्तित्व है। 'इम्फाल' यहाँ की प्रमुख नदी है। अपनी विविध वनस्पतियों एवं जीव–जंतुओं के कारण मणिपुर को 'भारत का आभूषण' तथा 'पूरब का स्विट्जरलैंड' भी कहा जाता है। लुभाने वाले प्राकृतिक दृश्यों, में विलक्षण फूल–पौधे, निर्मल वन, लहराती नदियाँ, पहाड़ियों पर छाई हरियाली शामिल हैं। इन सबके अलावा पर्यटकों के लिए अनेक आकर्षण हैं, जो राज्य में पर्यटन के विकास की ढेरों संभावनायें जुटाते हैं।

श्री गोविंद जी मंदिर, खारीम बंद बाजार (इमा कैथल), युद्ध कब्रिस्तान, शहीद मीनार, मेमोरियल कॉम्प्लोर क्सा, खोंघापत उद्यान, आईएनए मेमोरियल (मोइरांग), लोकतक झील, केयबुल लामजो राष्ट्रीय उद्यान, विष्णुपुर स्थित विष्णु मंदिर, सेंड्रा, डूको घाटी, राजकीय अजायबघर, खोंगजोम वार मेमोरियल आदि मणिपुर के कुछ महत्त्वपूर्ण पर्यटन–स्थल हैं।

हथकरघा उद्योग मणिपुर का सबसे बड़ा कुटीर उद्योग है। यहां यह उद्योग लंबे समय से फल–फूल रहा है और यह यहां सर्वाधिक रोजगार उपलब्ध करा रहा है– खासकर महिलाओं को। मणिपुर के हथकरघा उत्पादों में साड़ी, चादर, पर्दे, फैशनवाले कपड़े, स्कार्फ, तकिए के कवर आदि प्रमुख हैं।

ऐसे ही रंग–बिरंगे और समृद्ध मणिपुर के गले का हार है 'लोकतक झील'। यह झील मणिपुर के सबसे बड़े जिले, चुड़ाचांदपुर में स्थित है। भारत सरकार ने इसे 'संरक्षित क्षेत्र' घोषित कर रखा है। लोकतक झील मणिपुर के लिये बहुत आर्थिक और सांस्कृतिक महत्त्व रखती है। इसका जल विद्युत उत्पादन, पीने और सिंचाई के लिये प्रयुक्त होता है। सड़क और हवाई मार्ग से अच्छी तरह से जुड़े मणिपुर की लोकतक झील तक पहुंचने के लिये आपको इम्फाल से सड़क मार्ग होकर 39 किमी की दूरी तय करनी होगी।

लोकतक झील अंतरराष्ट्रीय स्तर की ऐसी भूमि है जहां पहुंचकर आपको लगता है कि कहीं किसी दूसरी दुनिया में पहुंच गये। तो आइए, हम पानी पर तैरते इस अद्भुत लोकतक झील का आनंद भी लेते हैं और आपको इसके बारे में बताते भी हैं कि लोकतक झील में आखिर आप पर्यटन का आनंद किस–किस तरह से उठा सकते हैं। तो चलिए, चलते हैं झील की तरफ।

लोकतक झील अपनी सतह पर तैरते हुए वनस्पति और मिट्टी से बने दीपों के

लिए प्रसिद्ध है, जिन्हें 'कुंदी' कहा जाता है। 'लोकतक' के 'लोक' का अर्थ है झरना या नदी और 'तक' का अर्थ होता है समाप्ति या अंत। क्योंकि मणिपुर की सारी नदियां आकर इसी झील में समा जाती हैं शायद इसीलिए इसका नाम लोकतक पड़ा। इस झील का कुल क्षेत्रफल लगभग 280 वर्ग किलोमीटर है, जो हवाई जहाज या गूगल अर्थ से छोटे–छोटे गोल रिंग की तरह दिखता है। यह लेक विश्व के कुछ गिने–चुने फ्लोटिंग लेक– यानी पानी पर तैरने वाले द्वीपों में से एक है। यह झील मणिपुर के मरांग में स्थित है, जिसकी स्मृति और मनोहारी रंग–रूप के लिए प्रतिवर्ष 15 अक्टूबर को 'लोकतक डे' मनाया जाता है।

ये झील मणिपुर की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जलविद्युत उत्पादन, सिंचाई और पेयजल आपूर्ति के लिये ये पानी के स्रोत के रूप में कार्य करती है। झील मछुआरों के लिए आजीविका का एक स्रोत भी है जो आसपास के इलाकों में और 'फुंदी' पर रहते हैं, जिन्हें 'फुमशां' कहा जाता है। हालांकि मानवीय गतिविधियों के कारण झील के पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर दबाव पड़ा है।

यह लेक इतना बड़ा है कि इसके हिस्से को उत्तरी, मध्य और दक्षिणी– तीन जोन के अंदर बांटा गया है। इसके दक्षिणी हिस्से में स्थित है 'केयबुल लामजाओ नेशनल पार्क' जो इस झील पर सबसे बड़ा तैरता हुआ द्वीप है। 'केयबुल लामजाओ' का कुल क्षेत्रफल लगभग 40 वर्ग किलोमीटर है, जो विलुप्त होते शंघाई हिरणों की शरण–स्थली भी है। यह विश्व का एक मात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान भी है। हम नाव से इसके बीच गए और साथ के लोगों ने द्वीप पर उतरकर इसके गद्देदार बिछौने पर कूद के इसका भरपूर आनंद लिया।

लोकतक झील में छोटे–छोटे तैरते हुए अनेक टापू हैं, जिनमें से ज्यादातर पर छोटे–छोटे कॉटेज बने हैं। यह होमस्टे कॉटेज काफी उचित दरों पर उपलब्ध हो जाते हैं, जिनमें रातभर के लिए ठहर कर आप झील के खामोश पानी, गहन नीरवता और चांदनी रात का भरपूर आनंद उठा सकते हैं। हमने भी एक रात इस झील पर बने कॉटेज 'लोकतक ईमा' में गुजारी। मणिपुरी में 'ईमा' का अर्थ होता है– मां और मणिपुरी लोग लोकतक को मां जैसी श्रद्धा देते हैं।

इस होमस्टे में प्रवेश करने पर एक हॉल मिलता है। हम बता दें कि यह पूरा कॉटेज बांस और उसकी खपच्चियों से बना हुआ रहता है। अन्दर कमरे बने रहते हैं, जहां सोने के लिये बिस्तर, मच्छरदानी, कंबल– सबकुछ उपलब्ध रहता है। यहां दो वॉशरूम भी मिलते हैं। उसके साइड में किचन की ओर बैठने और खाने की पूरी व्यवस्था है। अंदर बर्तन और गैस भी उपलब्ध रहता है। आप चाहे तो अपनी सामग्री लाकर स्वयं खाना भी बना सकते हैं। हमने वहां साथ लाए गए खाने का आनंद उठाया।

बाहर की ओर से सामने ऊंचे–ऊंचे पहाड़ दिखते हैं जहां से सूर्योदय की छटा बड़ी निराली होती है। हालांकि हमें सुबह सूरज–देव के दर्शन नहीं हुए। पर बादलों के पार से झांकती उनकी मनोहर छवि झील के पानी पर अलग ही प्रभाव छोड़ती दिखाई दे रही थी। शाम को इस होमस्टे में स्वचालित नौका से हम पहुंचे थे। नौका हमें यहां छोड़ लौट गई थी। इमरजेंसी के लिए छोटी–सी डोंगी जरूर बंधी थी और मुझे पूरा विश्वास था कि यदि संकट की घड़ी आई तो मेरे साथ लगातार बने रहे नावशेकपम राकेश और मोरांग केषोजित इस डोंगी से जरूर पार लगाएंगे।

स्वचालित नौका धीरे–धीरे हमारे कॉटेज की तरफ हमें लेने के लिए आ रही थी, पर मन इस नैसर्गिक सुख और आनन्द को छोड़ जाने को तैयार नहीं था। हमारे विशेष आग्रह पर नौका–चालक ने हमें पूरे द्वीप का भ्रमण कराया। प्रवाल की तरह तैरते हुए छोटे–छोटे टापुओं का अपने बिल्कुल करीब से गुजरते हुए देखने का अनुभव बहुत ही रोमांचक था।

बीच में ऐसे ही किसी द्वीप पर हम चाय पीने के लिए रुके तो कुत्ते और बिल्ली की शरारतों को भी देखा। अद्भुत पल, रोमांचक यात्रा और गहन अनुभवों को सहेजे जब मैं लोकतक झील से वापस लौट रहा था, तब भी जैसे वह झील मेरे साथ देर तक चल रही थी, चलती जा रही थी। मेरे भीतर जैसे वह समाती–सी जा रही थी– अव्यक्त, मौन स्वप्न–सी।

(सभी छायाचित्रः डॉ. किशोर सिन्हा)

❐

हिम्मत की सहेली आशा

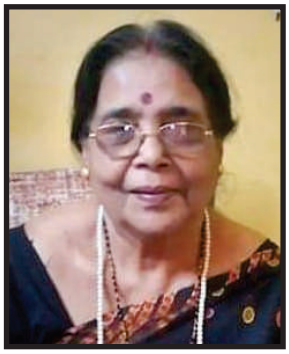

✍ डॉ. कुमकुम वेदसेन
मनोविश्लेषक, नवी मुंबई
संपर्कः 8355897893
ईमेल : k.vedasen@gmail.com

पूर्व अंक का समापन इगो शब्द से हुआ था अब आगे हम बढ़ते हैं। इगो है क्या? सभी इंसान के मन में यह प्रवृत्ति बनी रहती है इस प्रश्न के उत्तर में मैं यह कहना चाहूंगी ईगो की उत्पत्ति सामाजिक परिवेश के फल स्वरुप उत्पन्न होती है। बच्चा जब जन्म लेता है तो वह इस शब्द से परिचित नहीं होता है, यही कारण है बच्चों की मुस्कान में, बच्चों की किलकारी में हमें ईश्वर का एहसास होता है, निश्चलता मिलती है, प्यार मिलता है और मुस्कान देखकर सारी चिंताएं दूर हो जाती हैं, सारी परेशानियां खत्म हो जाती हैं। पर जैसे–जैसे हम सामाजिक परिवेश में विकसित होते जाते हैं हमारा इगो का विकास होने लगता है। इगो एक ऐसी प्रवृत्ति है जो मनुष्य के जीवन को संतुलित करने के लिए मानसिक रूप से निर्मित है पर परिस्थिति वश गलत प्रशिक्षण के कारण हमारा इगो गलत रास्ते पर चल पड़ता है। हम लोग इगो का सही उपयोग करना समझ ही नहीं पाते हैं। इसी संदर्भ में मैं दो बातों की चर्चा कर रही हूं। एक है मानसिक स्वास्थ्य और दूसरा है शारीरिक स्वास्थ्य। शारीरिक स्वास्थ्य सभी को दिख जाता है। बुखार का मेजरमेंट करने का एक थर्मामीटर है, अन्य बीमारियों का भी एक मापदंड है पर मानसिक रूप से जब हम विचलित हो जाते हैं, चिंता ग्रस्त हो जाते हैं, तनावपूर्ण स्थिति से संघर्ष करते रहते हैं तो उसका सामान्य तौर पर कोई मापदंड नहीं है। उस समस्या को हमें खुद अपने आत्म विश्लेषण के माध्यम से ही समाधान करना पड़ता है। शारीरिक कमजोरी के लिए हम विटामिन लेते हैं, कैल्शियम लेते हैं विटामिन डी लेते हैं, इत्यादि इत्यादि लेकिन मानसिक कमजोरी हमारी सोच के अपरिपक्वता के ऊपर निर्भर करती है। अगर सच में परिपक्वता है तो विटामिन की जरूरत कम पड़ती है लेकिन अगर सोच में अपरिपक्वता है तो उसे संतुलित करने के लिए कुछ विटामिन की आवश्यकता पड़ती है। अब मानसिक विटामिन क्या हो सकते हैं। जहां तक मेरे विचार से विटामिन ए पारिवारिक रिलेशनशिप है।

ए फॉर अटैचमेंट– जिस व्यक्ति से भी आपका अटैचमेंट है उसे स्वस्थ बनाएं, उसकी देखरेख करें, उसके लिए अपना समर्पण दें तभी उनसे आप उम्मीद करेंगे वह भी आपको समर्पण की भावना से आपका आदर सत्कार करेंगे।

दूसरा विटामिन है बी– बी का अर्थ होता है बॉन्डिंग, बॉन्डिंग का अर्थ है पारिवारिक मर्यादा। रिश्तों, दोस्तों के साथ एक बॉन्डिंग बनाना और बॉन्डिंग हमेशा स्वस्थ नहीं होते हैं। उसमें कभी नमक ज्यादा होता है तो कभी चीनी कम पड़ते हैं तो इन्हें संतुलन बनाने के लिए हमें अपनी सोच में कहीं ना कहीं फॉरगेटिंग और फोर्गिवनेस का फार्मूला अप्लाई करना पड़ता है। कुछ चीज छोड़नी पड़ती है, कुछ चीज लानी पड़ती है और फिर हम अपनी सोच को एक नई दिशा में, नई डोर से बांधने का प्रयास करते रहें तभी विटामिन बी की कमी मानसिक रूप से हमें मजबूत करेगी।

तीसरा विटामिन है विटामिन सी– विटामिन सी का अर्थ कमिटमेंट है। हम जब भी इस संसार में आए हैं तो एक कमिटमेंट के साथ आए हैं। कभी हमें अपने माता–पिता के प्रति कमिटमेंट होना है, कभी पड़ोसियों के प्रति कमिटमेंट होना है, कभी हमें अपने कार्य स्थल पर कार्य भूमि में जिसे कर्मभूमि भी कह सकते हैं वहां पर कमिटमेंट होना है। उस कमिटमेंट को हम जितने अच्छे तरीके से पूरा करेंगे हमारा मानसिक स्वास्थ्य उतना ही मजबूत होगा और हम दिल से संकल्पित रहें। मेरे ऊपर एक विश्वास लोगों का बनेगा और जब मेरे ऊपर विश्वास होगा तो निश्चित ही हमें भी दूसरे के ऊपर भरोसा करना पड़ेगा।

चौथा विटामिन है विटामिन डी– जो कि शारीरिक रूप में सूर्य की रोशनी से मुझे मिलता है लेकिन मानसिक रूप से यह विटामिन डी त्याग और समर्पण से मिलता है। वैसे विचारों को त्यागना जो बिना समय को देख मन में उभरने लगते हैं, एक प्रकार से इसे लालच भी कह सकते हैं उदाहरण के लिए जब हम खाना खाने बैठते हैं तो हमें जो चीज पसंद है वह थोड़ी आवश्यकता से अधिक खाने की चाहत होने लगती है तो यह मेरा लालच हुआ। पर यदि हम स्वयं को संयमित रखते हैं तो धीरे–धीरे हमें अपनी इंद्रियों पर भी नियंत्रन करने आ जाता है फल स्वरुप यह होता है कि हमारा मानसिक स्वास्थ्य इन चारों विटामिन के सकारात्मक समर्पण से विकसित होने लगता है। और मानसिक स्वास्थ्य सकारात्मक होने लगती है। यदि मानसिक रूप से हम स्वयं को खुश और स्वस्थ रखते हैं तो निश्चित हमारी शारीरिक बीमारियां धीरे–धीरे ऑटोमेटेकली कम होने लगेंगी जबकि मुझे लगता है कि मैंने इतनी सारी दवाइयां खायीं, एंटीबायोटिक लिया जिसके कारण हमारा शारीरिक स्वास्थ्य सुधरने लगा है। यह बिल्कुल सही है इसमें कोई दो राय नहीं है लेकिन शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ्य का होना अति आवश्यक है और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आपको अपने रिश्तों में मिठास लानी होगी, बोली में मधुरता लानी होगी और खुद को संयमित और संकल्पित करना होगा। अब अगले अंक में मैं इसकी चर्चा करूंगी धन्यवाद।

❐

दुग्ध का उत्पादन विश्व में शीर्ष पर, अब निर्यात की ओर अग्रसर भारत

✍ डॉ. बी.आर. नलवाया
पूर्व शोध निदेशक, मंदसौर, मध्य प्रदेश

हर घर में बच्चे से लेकर वृद्धो के लिए दुग्ध की जरूरत बनी रहती है, क्योंकि हम सभी दूध या इससे बने उत्पादों जैसे दही, छाछ, लस्सी, पनीर, घी, मक्खन, आइसक्रीम, मिठाई आदि का किसी न किसी रूप में उपयोग करते हैं। देसी गायों का दूध हमारे लिए बेहद उपयोगी है, क्योंकि इसमें बीमारियों से लड़ने की क्षमता काफी अधिक होती है। वैसे तो यहां गाय भैंस दोनों के ही दुग्ध का अध्ययन किया गया है। दूध के अंदर विटामिन, कैल्शियम, फैट्स, मिनरल जैसे सारे पोषक तत्व मिलते हैं इसलिए इसे संपूर्ण आहार भी कहा जाता है।

केंद्र सरकार हर कार्य में नवाचार को अलमीजामा दे रही है, अब इस दूध उत्पादन क्षेत्र में भी नवाचार किया जा रहा है, नवाचारों में दूध, खाद्यान्न ,पर्यावरण सहित प्रत्यक्ष चुनौती से निपटने की तैयारी की जा रही है। इस क्षेत्र में फिलहाल जनता को सबसे बड़ा फायदा जैविक दूध के रूप में मिलने वाला है। पशुधन के बिना मिलने वाला यह जैविक दूध दूध की कमी को पूरा करने के साथ पौष्टिक भी है। आईटी क्रांति के तहत जैविक दूध और अधिक खाद्य सामग्री अभी भले ही लोगों को एक चौंकाने वाली बात लग सकती हैं लेकिन भविष्य की जरूरत है, इसी से पूरी होगी । यह दूध केवल जैविक उत्पादकों से तैयार होगा। इसमें रसायन का उपयोग बिल्कुल नहीं होगा।

देश में दूध, दही, बटर, पनीर जैसे दुग्ध उत्पादों का इन दिनों बड़े पैमाने पर उत्पादन हो रहा है। आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश बन चुका है, विश्व के दुग्ध उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी 24 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है। वर्ष 2014 में भारत में 14.6 करोड़ टन दूध का उत्पादन होता था वहीं 2022 में यह बढ़कर 21 करोड़ टन पर पहुंच गया है। इन 8 सालों में करीब 44% की वृद्धि हुई। वर्ष 1974 में दूध का उत्पादन 2.3 करोड़ टन था जो 2022 में लगभग 10 गुना बढ़कर 21 टन हो गया। रोजगार की दृष्टि से 8 करोड़ से अधिक लोगों की आजीविका पशुधन से ही चल रही है। पिछले 9 वर्षों में देश में दूध का उत्पादन लगभग 57% बढ़ा है। नतीजन प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 2022–23 में 459 ग्राम प्रतिदिन हो गई है। 9 वर्ष पहले महज 300 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन थी। अब प्रत्येक भारतीय दुनिया में औसतन खपत में से 65 ग्राम अधिक दूध पीने लगा। दूध की वैश्विक औसत खपत फिलहाल 394 ग्राम प्रति व्यक्ति है। लगभग 150 देशों में भारत की सहदुग्ध उत्पादन की मांग बनी हुई है । पिछले वर्ष 65 लाख टन दूध उत्पादन का निर्यात हुआ था।

दुग्ध उत्पादन में देश मे पहले स्थान पर उत्तरप्रदेश, दूसरे स्थान पर राजस्थान एवं तीसरे स्थान पर मध्यप्रदेश है। अब मध्य प्रदेश भारत में प्रथम स्थान पर आने वाला है। गौरतलब है कि पिछले वर्ष गुजरात के बनासकांठा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कहा कि दुग्ध उत्पादन में भारत दुनिया में शीर्ष पर है, इस लिहाज से मध्यप्रदेश का योगदान भी उल्लेखनिय है। विश्व का 24% दुग्ध भारत में उत्पादित होता है, लेकिन मांग 28% तक बढ़ गई है। दूध की मांग बढ़ने और सप्लाई सीमित होने के कारण अब दूध ₹40 प्रति लीटर से बढ़कर ₹60 से ₹80 प्रति लीटर तक पहुंच गया है। दूसरी तरफ चारे के संकट में खेती का रकबा कम हुआ और जानवरों को खिलाने वाला बाजरा अतिवृष्टि से जड़ों से उखड़ कर खेतों में पानी से सड़ने लगा, इससे देश में पशुचारे की कीमतें भी बढ़ी है। दुग्ध उत्पादक को 75 पैसे न्यूनतम मिलते है जब हम ₹1 के दुग्ध की खरीदी करते हैं

देश की अर्थव्यवस्था में डेयरी उद्योग का 5% योगदान है। भारतीय दूध उद्योग में आई इस क्रांति को श्वेत क्रांति, दुग्ध क्रांति जैसे नामों से जाना जाता है, लेकिन वास्तविक अर्थों में तो यह स्त्री उद्यम की क्रांति है। ग्रामीण जीवन का अनुभव रखने वाले पाठक इस बात से भली–भांति परिचित हैं कि दुधारू पशुओं का पालन मूल रूप से महिलाएं ही करती हैं। वर्ष 1955 से महिला डेयरी सहकारी नेतृत्व कार्यक्रम की शुरुआत की गई थी और इसके परिणाम आज पूरे भारत में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। आज

सहकारी दुग्ध के उत्पादन का यह नेटवर्क भारत के 418 जिलों में 1,55,634 ग्राम स्तरीय समितियों तक फैला हुआ है और इसमें लगभग 1.51 करोड सक्रिय दुग्ध सदस्यों में 43 लाख महिलाएं हैं।

बीते गत वर्ष गोवंश में आई महामारी लंपीडिसिस के कारण करीब 1,86,000 मवेशियों की मौत का आंकड़ा सामने आया है। ऐसे में दुग्ध का उत्पादन तो घटा, परंतु देश में दुग्ध की मांग 8 से 10% बढ़ी। यदि देखा जाए तो आजादी के समय देश में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता मात्र 126 ग्राम थी जो आज 459 ग्राम से ज्यादा हो गई है।

जनता में दुग्ध की मांग की बढ़ोतरी को देखते हुए केंद्र ने ऐलान किया है की जरूरत हुई तो दुग्ध उत्पादों खासकर घी और मक्खन का विदेश से आयात किया जाएगा, दूसरी तरफ इसका विरोध भी किया जा रहा है। आज भारत दुग्ध उत्पादन में दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक होते हुए निर्यात करने को अग्रसर है, इसके बावजूद भी पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा। क्योंकि यहाँ गौ संवर्धन की नीति बहुत लचर है इस पर सरकार को ध्यान देने की आवश्यकता है। वर्तमान में 30 करोड़ से अधिक गाय एवं भैंसे हैं, इसी के साथ दो करोड़ से अधिक भेड़ बकरियां आदि पशुओं को पालन पोषण करके दूध प्राप्त किया जा रहा है। इसके बावजूद दुनिया में भारत दूध उत्पादन में शीर्ष स्थान पर है। ❐

सोशल मीडिया

बिहार का छठ इफेक्ट

✍ प्रवीण बागी

चार –पांच दिनों के लिए बिहार के लोगों का नया अवतार दिखेगा। जहां –तहां थूकने, मूतने और कूड़ा फेंकनेवाले, अपने गली –कूचों को चमकाने में जुटे दिखते हैं। यह छठ इफेक्ट है। बिहार के बाहर का कोई आदमी छठ के समय अगर बिहार आएगा तो उसे साफ –सुथरा, चमकता बिहार दिखेगा।

आम दिनों में जिस जगह कूड़े के ढेर रहते हैं वहां चूने का छिड़काव कर चमचमा दिया जायेगा। कई स्थानों पर तो सड़क धो दी जाती है, क्योंकि उधर से छठव्रती गुजरेंगी। यह बदलाव सचमुच बहुत मनभावन होता है। काश, बिहारी मानस का यह परिवर्तन स्थायी होता ?

हे छठी मईया और सूर्य देव लोगों की भक्ति की शक्ति को मानस परिवर्तन का माध्यम बना दो। यह आशीर्वाद दो कि बिहार हमेशा छठ के दिनों की तरह ही चमकता और दमकता रहे।

❐

हाउस प्रोपर्टी कितना देना होता है टैक्स, जानिए कैसे क्लेम कर सकते हैं डिडक्शन

✍ निशांत कुमार प्रधान
इंटरनल ऑडिटर,
लेबर लॉ एडवाइजर एवं टैक्स प्रैक्टिशनर्स
संपर्क: 8210366618
ईमेल : neeaan7@gmail-com

भारत में कई लोगों के इनकम का जरिया उनकी प्रॉपर्टी होता है। सरकार उनकी प्रॉपर्टी पर भी टैक्स लगाती है। इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 22 से 27 तक का संबंध प्रॉपर्टी से होता है। आइए जानते हैं इन अहम नियमों के बारे में।

हाउस प्रोपर्टी टैक्स नियम

भारत में बहुत से लोग अपनी प्रॉपर्टी से कमाई करते हैं। यही उनका सोर्स ऑफ इनकम होता है। हाउस प्रॉपर्टी से होने वाले इनकम पर टैक्स लगाया जाता है। प्रॉपर्टी का जो लीगल ओनर होता है, उसे ही टैक्स देना होता है।

हाउस प्रॉपर्टी में घर, ऑफिस, दुकान या फिर किसी भी तरह की जमीन शामिल होती है। इनकम टैक्स विभाग रेजिडेंशियल और कमर्शियल प्रॉपर्टी को लेकर किसी भी तरह का अंतर नहीं करती है।

क्या है हाउस प्रॉपर्टी के नियम?

इनकम टैक्स रिटर्न में सभी तरह की प्रॉपर्टी पर टैक्स लगाया जाता है। यह इनकम टैक्स एक्ट 1961 के तहत लगता है। अगर किसी प्रॉपर्टी को बिजनेस या फिर किस और पेशे के लिए इस्तेमाल किया जाता है, तब उस पर इनकम फ्रॉम बिजनेस एंड प्रोफेशन के तहत टैक्स लगाया जाता है। हाउस प्रॉपर्टी की कैटेगरी में मौजूद प्रॉपर्टी की टैक्सेबल वैल्यू ही उसकी एनुअल वैल्यू होती है।

कैसे होता है टैक्स का कैलकुलेशन?

इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 22 से 27 तक का संबंध हाउस प्रॉपर्टी के टैक्स नियमों से होता है। इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 24 में कहा गया है कि हाउस प्रॉपर्टी से होने वाली इनकम का कैलकुलेशन प्रॉपर्टी के रेट पर 30 फीसदी की कटौती के बाद होता है। इस कटौती को स्टैंडर्ड डिडक्शन कहा जाता है।

अगर आपने प्रॉपर्टी पर लोन लिया है, तब भी आप डिडक्शन क्लेम कर सकते हैं। इसमें प्रॉपर्टी खरीदने, कंस्ट्रक्शन, रेनोवेशन या रिपेयरिंग से रिलेटिड लोन शामिल होते हैं। अगर घर में आप खुद रहते हैं, तब आप एक साथ दो सेल्फ हाउस प्रॉपर्टीज के लिए अधिकतम 2 लाख रुपये तक के डिडक्शन का क्लेम कर सकते हैं।

ज्वाइंट लोन पर क्लेम से जुड़े नियम

प्रॉपर्टी के एनुअल वैल्यू को हाउस प्रॉपर्टी के इनकम के रुप में लिया जाता है। इसी आधार पर टैक्स को कैलकुलेट भी किया जाता है। अगर पति–पत्नी दोनों ने होम लोन लिया है, तब दोनों ही लोन के प्रिंसिपल और उसके इंटरेस्ट पर डिडक्शन क्लेम कर सकते हैं।

❐

करियर में सफलता की नींव है इंटर्नशिप

✍ विजय गर्ग
शैक्षिक स्तंभकार, मलोट, पंजाब

किसी सफल प्रोफेशनल करियर की नींव तैयार करने में बेहतर अकादमिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ इंटर्नशिप की भी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इससे आपकी न केवल करियर ग्रोथ बेहतर होती है, बल्कि आपका रेज्यूम भी आकर्षक बनता है, जो कारपोरेट दुनिया में प्रवेश के लिए बहुत ही आवश्यक है। किसी प्रोफेशनल कोर्स को पूरा करने के बाद जब आप इंटर्नशिप करते हैं तो इससे आपको वास्तविक दुनिया का अनुभव प्राप्त होता है। साथ ही कौशल को निखारने और नेटवर्किंग का मौका भी मिलता है, जो आपके बेहतर भविष्य की नींव तैयार करता है।

नई स्किल सीखने का मौकाः पढ़ाई के बाद स्किल को निखारने के लिए इंटर्नशिप से बेहतर मौका और कुछ हो ही नहीं सकता। यह सही है कि अच्छे करियर के लिए आपकी डिग्री और ग्रेड बहुत मायने रखता है, पर इंटर्नशिप करके जब आप किसी प्रोफेशनल करियर में प्रवेश करते हैं तो मान लिया जाता है कि आप एक पेशेवर के तौर पर परफेक्ट हैं, क्योंकि इंटर्नशिप के दौरान आप टेक्निकल ज्ञान और कौशल ही नहीं सीखते, बल्कि यहां टीम के रूप में काम करने का अवसर भी प्राप्त होता है।

नेटवर्किंग का लाभः कारपोरेट जगत में सफलता का सबसे पुख्ता फार्मूला है– स्किल और नेटवर्किंग। जब आप इंटर्न होते हैं तो इंडस्ट्री के टाप प्रोफेशनल्स से मिलने और उनके साथ काम करने का मौका मिलता है। उनके साथ काम करके ऐसी बहुत सी चीजें सीख सकते हैं, जो भविष्य में काम आने वाला है।

रेज्यूम को मिलती है मजबूतीः इंटर्नशिप अनुभव आपके स्किल्ड होने का एक शुरुआती साक्ष्य होता है, इसलिए कहा जाता है कि अपने रेज्यूम में इसकी जानकारी को अच्छी तरह से दर्ज करना चाहिए।

करियर लक्ष्यों को लेकर स्पष्टताः कामकाजी अनुभव प्राप्त करने के दौरान आप यह तय करने की स्थिति में होते हैं कि इंडस्ट्री में किस भूमिका के लिए आप सबसे उपयुक्त होंगे और फिर उसी आधार पर अपना करियर लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं। इसके लिए आप वरिष्ठों से मार्गदर्शन और सुझाव भी प्राप्त कर सकते हैं।

कार्य संस्कृति सीखने का मौकाः जब इंटर्नशिप करके निकलते हैं तो आपके आत्मविश्वास का स्तर काफी ऊंचा हो जाता है। किसी प्रोजेक्ट को पूरा करने, तनाव और चुनौतीपूर्ण स्थिति का सामना करते हुए प्रबंधन के कई गुर सीख जाते हैं। इससे किसी इंटरव्यू और प्रोफेशनल इंटरैक्शन में आपको बहुत फायदा मिलता है। ❐

इंटर्नशिप से रोजगार तक की यात्रा

✍ अवनीश कुमार गुप्ता
पुस्तकालयाध्यक्ष
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

आज युवाओं के बीच, भारत में बेरोजगारी एक गंभीर समस्या बनी हुई है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी युवाओं के पास वह व्यावहारिक कौशल नहीं होते, जिनकी आज की बाजार में मांग है। इसी समस्या को हल करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना का शुभारंभ किया। इस योजना का मुख्य लक्ष्य देश के 4.1 करोड़ युवाओं को रोजगार के काबिल बनाना और उन्हें नौकरी के लिए कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना है।

इस योजना के अंतर्गत, युवाओं को विभिन्न कंपनियों में इंटर्नशिप के माध्यम से एक वर्ष तक व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। यह पहल छात्रों को उनके अध्ययन के दौरान ही वास्तविक कार्य वातावरण में खुद को साबित करने का मौका देगी। हालांकि, इस योजना के कार्यान्वयन में

कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी हैं, जिन पर ध्यान देना आवश्यक है।

पहली चुनौती यह है कि इस योजना का उद्देश्य सिर्फ इंटर्नशिप प्रदान करना नही है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है कि इन इंटर्नशिप से प्राप्त कौशल वास्तव में नौकरी बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप हों। कई बार कंपनियाँ केवल अनुभवी उम्मीदवारों की तलाश करती हैं, और यदि इंटर्नशिप का प्रशिक्षण इस दिशा में नहीं है, तो युवा बेरोजगारी के चक्र में फंसे रह सकते हैं। इसके लिए जरूरी है कि सरकार शिक्षण संस्थानों के साथ मिलकर पाठ्यक्रमों में बदलाव करे और व्यावहारिक कौशल को प्राथमिकता दे। इससे युवा इंटर्नशिप के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सकेंगे।

दूसरी चुनौती यह है कि इस योजना में यह कहा गया है कि इंटर्नशिप का स्थान स्थानीय स्तर पर होगा, यानी राज्य या जिले के भीतर। लेकिन भारत के विभिन्न राज्यों में औद्योगिक विकास की असमानता है। जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखंड जैसे राज्यों में औद्योगिक इकाइयाँ कम हैं, वहां के युवाओं को इंटर्नशिप के लिए भीड़–भाड़ वाले क्षेत्रों में भेजना मुश्किल हो सकता है। ऐसे में, सरकार को इन राज्यों में विशेष योजना बनानी होगी ताकि वहां के युवाओं को भी रोजगार के समान अवसर मिल सकें। यह स्थानीय उद्योगों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे न केवल रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, बल्कि युवा प्रतिभाओं को भी अपने प्रदेश में ही काम करने का मौका मिलेगा।

तीसरी चुनौती यह है कि इंटर्नशिप के बाद युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की प्रक्रिया को मजबूत करना होगा। कई बार, इंटर्नशिप के दौरान अच्छे प्रदर्शन के बावजूद, कंपनियाँ इंटर्न को स्थायी नौकरी नहीं देती हैं। इसके लिए आवश्यक है कि सरकार इंटर्नशिप के बाद रोजगार की दिशा में ठोस कदम उठाए। एक विकल्प यह हो सकता है कि सरकार कंपनियों को प्रोत्साहित करे कि इंटर्न को नौकरी देने पर उन्हें आर्थिक लाभ प्राप्त हो। इसके अतिरिक्त, योजना के अंतर्गत आने वाले युवाओं की प्रगति पर निगरानी रखना जरूरी है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन मिल रहा है।

इस योजना में एक और महत्वपूर्ण पहलू है, जिसमें छात्रों को विभिन्न प्रकार की प्रशिक्षण कार्यशालाओं और सामुदायिक परियोजनाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। यह न केवल उन्हें व्यावहारिक अनुभव देगा, बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाएगा। इसके साथ ही, छात्रों को अपने संबंधित क्षेत्रों में नेटवर्किंग के अवसर भी मिलने चाहिए, जिससे वे अपने करियर को आगे बढ़ा सकें। यह प्रक्रिया उन्हें न केवल नौकरी के लिए तैयार करेगी, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी एक कदम होगा।

योजना की सफलता के लिए एक मजबूत निगरानी प्रणाली स्थापित करने की आवश्यकता है। यदि योजना का कार्यान्वयन सही तरीके से नहीं किया गया, तो इसका प्रभाव सीमित हो सकता है। सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि सभी हितधारकों, जैसे कि शिक्षा संस्थान, उद्योग और स्थानीय निकाय, इस योजना में सक्रिय रूप से शामिल हों। इसके लिए एक केंद्रीय निगरानी समिति का गठन किया जा सकता है, जो विभिन्न राज्यों में योजना के क्रियान्वयन की प्रगति की समीक्षा करेगी और समय–समय पर आवश्यक सुधारों की सिफारिश करेगी।

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना को सफल बनाने के लिए आवश्यक है कि इसे केवल एक सरकारी योजना के रूप में नहीं देखा जाए, बल्कि इसे एक व्यापक सामाजिक आंदोलन के रूप में स्वीकार किया जाए। सभी हितधारकों को एक साथ मिलकर काम करना होगा ताकि युवा पीढ़ी को रोजगार के अधिकतम अवसर प्राप्त हो सकें। इससे न केवल युवाओं का भविष्य सुरक्षित होगा, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इस योजना के माध्यम से जो बदलाव लाए जा रहे हैं, वे वास्तविकता में युवाओं के लिए रोजगार के दरवाजे खोलें और उन्हें उनके सपनों की ओर ले जाएँ।

इस प्रकार, यह योजना केवल इंटर्नशिप का एक साधन नहीं है, बल्कि यह युवाओं के समग्र विकास का एक महत्वपूर्ण कदम है। अगर इसे सही दिशा में लागू किया जाए, तो यह निश्चित रूप से भारत के युवाओं के लिए एक सकारात्मक बदलाव ला सकती है। न केवल भारत के युवाओं के लिए बल्कि देश के समग्र विकास के लिए भी महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हो सकता है। हर युवा को अपने सपनों को पूरा करने का अवसर मिले और उन्हें अपने ही देश में सम्मानजनक रोजगार प्राप्त हो। यही इस योजना का असली मकसद है, और इसे हासिल करने के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा।

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना निस्संदेह एक सकारात्मक पहल है, जो युवा बेरोजगारी की समस्या को हल करने के उद्देश्य से शुरू की गई है। लेकिन यह ध्यान रखना जरूरी है कि यह योजना केवल तभी सफल होगी जब इसके विभिन्न पहलुओं पर ध्यान दिया जाएगा और इसके लक्ष्यों को वास्तविकता में बदला जाएगा। योजना के तहत प्रशिक्षित युवाओं को दीर्घकालिक रोजगार के अवसर प्राप्त हों, इसके लिए सरकार को स्पष्ट रणनीति बनानी होगी और सभी संबंधित हितधारकों के साथ मिलकर काम करना होगा। ❐

छठ स्पेशल गुड़ की खीर एवं ठेकुआ

✍ किरण उपाध्याय
रेसिपी एक्सपर्ट

गुड़ की खीर

हम छठ स्पेशल गुड़ की खीर बनाएंगे। हम खीर को दो तरह से बनाएंगे , गुड़ की खीर बहुत ही हेल्दी और स्वादिष्ट होती है।

सामग्रियां:–

1 लीटर दूध, आधा कटोरी खीर का चावल या बासमती चावल, एक कटोरी गुड़, छोटी इलायची और ड्राई फ्रूट्स।

गुड़ की खीर बनाने की विधि:–(१) सबसे पहले हम 1 लीटर दूध उबाल लेंगे, एक तरफ हम एक कटोरी पानी में एक कटोरी गुड़ या आवश्यकता अनुसार गुड़ को हम अच्छी तरह से उबाल लेंगे और ठंडा होने के लिए रख देंगे। जब दूध हमारा अच्छी तरह से उबलने लगेगा तब हम चावल को अच्छी तरह से धोकर दूध में अच्छी तरह से मिला लेंगे ,नहीं तो चावल एक जगह बंध जाएंगे और जल भी सकते हैं। आंच को हम मध्यम कर लेंगे और दूध में चावल को हम बीच–बीच में चलाते रहेंगे। जब चावल अच्छी तरह से गल जाएगा, तब हम गैस बंद कर देंगे और इसमें छोटी इलायची मिला लेंगे, थोड़ा ठंडा होने पर गुड़ के घोल को हम धीरे–धीरे से खीर में मिलाएंगे, अब हम

ड्राई फ्रूट्स मिला लेंगे। हमारी खीर तैयार हो गयी।

(२) सबसे पहले हम एक बर्तन में 1 लीटर पानी उबाल लेंगे। जब पानी उबलने लगेगा ,तब हम उसमें आधा कटोरी खीर का चावल या बासमती चावल को अच्छी तरह से धोकर मिला लेंगे और बीच–बीच में चलाते रहेंगे। जब चावल आधा पक जाएगा तब हम उसमें एक कटोरी या आवश्यकता अनुसार गुड़ मिला लेंगे, और मध्यम आंच पर पकाएंगे। बीच–बीच में हम चावल को अच्छी तरह से चलाते रहेंगे, जिससे कि चावल एक जगह बंधे नहीं और जले नहीं। जब चावल आधा गल जाएगा तब हम उसमें आवश्यकता अनुसार गुड़ या करीब एक कटोरी गुड़ मिला लेंगे, और इसे बीच–बीच में चलाते रहेंगे। जब चावल हमारा अच्छी तरह से गल जाएगा, तब हम इसमें छोटी इलायची मिला लेंगे और गैस बंद कर देंगे। थोड़ा ठंडा होने के बाद हम खीर में आवश्यकता अनुसार दूध और ड्राई फ्रूट्स मिला लेंगे। हमारी खीर बनकर तैयार हो गयी।

गुड़ का ठेकुआ

हम छठ स्पेशल गुड़ का ठेकुआ बनाएंगे जो बहुत ही स्वादिष्ट और खस्ता होता है।

सामग्रियां:–

दो कटोरी आटा, एक कटोरी गुड़, आधा कटोरी घी,ड्राई फ्रूट्स आवश्यकता अनुसार ,तलने के लिए घी।

ठेकुआ बनाने की विधि:– एक बर्तन में हम आधा कटोरी पानी उबालेंगे। जब पानी उबलने लगेगा तब धीमी आंच पर हम पानी में गुड़ डालेंगे और लगातार चलाएंगे। पानी और गुड़ में जब 5–6 बार उबाल आ जाएगा तब हम गैस बंद कर देंगे इस बीच हम आटा में घी (संभव हो तो घी गर्म कर ले) मिला लेंगे और अच्छी तरह से दोनों हाथों से मसल– मसल कर आटे को मिला लेंगे अब हम गुड़ वाले पानी को आटे में अच्छी तरह से मिला लेंगे। गुड़ को उबालकर आटे में मिलाने से हमारा ठेकुआ फटता और टूटता नहीं है। अब हम आटे में छोटी इलायची और नारियल या ड्राई फ्रूट्स मिला लेंगे। अब हम कड़ाही में घी गर्म करेंगे और आटे की गोल–गोल लोई बनाकर ठेकुआ को किसी सांचे या हाथों की मदद से गोल या लंबा आकार दे देंगे और मध्यम आंच पर सुनहरा होने तक तल लेंगे। हमारा स्वादिष्ट और खास्ता ठेकुआ बनकर तैयार हो गया है। ❐

बोलो जिंदगी

पत्रिका में विज्ञापन के लिए हमसे संपर्क करें।

Mob.: 7903935006 / 9122113522

E-mail : bolozindagi@gmail.com

''बोलो जिंदगी''
मासिक पत्रिका के सितंबर–अक्टूबर
अंक 2024 (संयुक्तांक) का लोकार्पण
करते हुए श्री नीतीश मिश्रा जी,
माननीय पर्यटन एवं उद्योग मंत्री,
बिहार सरकार